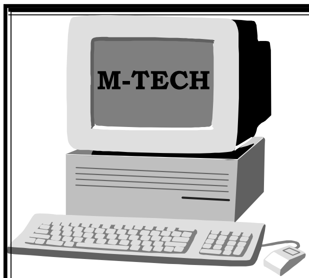


# M-TECH

(COMPUTER EDUCATION CENTRE)

इग्नू द्वारा संचालित MCA. BCA, CIC, DCO

DOEACC 'O' Level & 'A' Level

MCRP PGDCA, DCA

TALLY. JAVA. VISUAL BASIC, C++. 3DHOME. ORACLE, AUTOCAD, INTERNET

**Cont. :** M-Tech Computer Education Centre

धुरसा गांव, मेन रोड कौशाम्बी, इलाहाबाद

---

650621:☎ Shop 401918 :☎ Resi

## बिल्ले सिलाई मशीन कम्पनी

SEWING MACHINE CO

51/59, सराय गढ़ी, इलाहाबाद.211003

डिलर : ♣ ऊषा ♣ मेरीट ♣ आमेक्स ♣ रीटा ♣ सहारा ♣ मयूर ♣ सत्यम ♣ डीलुक्सो सिलाई मशीन्स

प्रोपराइटर : गुरदीप सिंह

---

## CYBER POINT

मुक्ता विहार, ए0डी0ए0 रोड, नैनी, इलाहाबाद–8

कम्प्यूटर जॉब वर्क, थीसीस वर्क, प्रोजेक्ट वर्क

स्क्रीन प्रिटींग, विजिटींग कार्ड, शादी कार्ड, पम्पलेट,

पोस्टर की डिजाइनिंग का एकमात्र और उत्कृष्ट संस्थान

हरी प्रताप सिंह

---

*जय माता दी* *जय माता दी*

RAJENDRA

## Teep Frankie

आपके शहर में पहली बार नया तथा मजेदार बाम्बे फ्रेंकी,

पनीर फ्रेंकी खाइये भरपूर स्वाद का आनन्द लीजिए।

नोट : किसी भी पार्टी में फ्रेंकी का ताजा आईटम बुक होता है।

Cont : राजेन्द्र फास्ट फुट, **ESNO MAN** रेस्टोरेंन्ट

आफिस : *72, जमुना बैंक रोड, रेलवे टिकट घर के पास कीटगंज*

*घर का पता :* 1B/6 Cotton Mills Tiraha, Naini, Allahabad

---

सभी ग्राहको की दुर्गापुजा एवं दीपावली की शुभकामनाएं

## दूरदर्शन इलेक्ट्रॉनिक्स

53/38, भुसौली टोला, खुल्दाबाद, इलाहाबाद–211016

हमारें यहाँ सभी प्रकार की टी.वी., डेक, ऑडियों, वीडियों और इलेक्ट्रॉनिक्स, विज्ञापन बोर्ड नए बनते है तथा रिपेयरिंग होती है।

प्रो0 हरिशंकर शर्मा

---

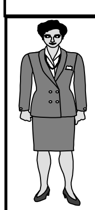

ऊँ

फोन निवास ☎: 416515

## शगुन पैलेस

207, राजरुपपुर, इलाहाबाद

(रेलवे कालोनी के सामने, सिंह मिष्ठान भंडार के बगल में)

सभी प्रकार के गिफ्ट आइटम, कास्मेटिक्स, इमीटेशन ज्वैलरी, होजरी, क्राकरी एवं स्टेशनरी का एकमात्र कलेक्शन

नोटः हमारे यहाँ प्लास्टिक की वाल्टी, टब, बस्ते तथा चमड़े का पर्स भी मिलता है।

एक बार अवश्य पधारें।

धन्यबाद

प्रो0 अजय कुमार

---

न्छ्र प्है ब्ट्ड च्न्ज्म्ट

।ठ।क्म्ड्ल

3/A, Vinova Nagar, ADA Road, Naini, Allahabad

**Learn in** - Tally, FoxPro, Windows, Msoffice, Java, Oracle, Autocad, Oracle, 3Dhome

**Note:** Software Development, Hardware & Job Work.

मासिक पत्रिका

विश्व स्नेह समाज

अंक 2 नवम्बर 2001

प्रधान संपादक एवं प्रकाशक

**गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी**

संपादक :

**डॉ0 कुसुम लता मिश्रा**

सलाहकार संपादक :

मोइनूद्दीन अहमद सिद्दीकी

सहायक संपादक :0 श्रीमति जया द्विवेदी

0 रजनीश कुमार तिवारी 0 सीमा मिश्रा

विज्ञापन प्रबंधक :

श्री एस0 एन0 तिवारी : ☎695579

ब्युरो :

श्रीमती पुष्पा शर्मा (पटना)

गिरिराजजी दूबे (गोरखपुर)

सुजीत सिंह (प्रतापगढ़)

मो0 तारिक ज्या (जौनपुर)

मिस संहमित्रा भोई (उड़ीसा)

मिस लक्ष्मी हजोअरी (आसाम)

सोशन एलिजाबेथ सिंह (इलाहाबाद)

सम्पादकीय कार्यालय :

277 / 486, एफ0सी0 एल0सी0

कम्पाउन्ड, जेल रोड, चकरघुनाथ,

नैनी, इलाहाबाद

शाखा :

एम.टेक कम्प्यूटर एजुकेशन सेन्टर

कौशाम्बी रोड, धुरसा, इलाहाबाद

फोन न0 :

कम्पोजिंग एवं डिजाईनिंग :

**मो0 तारिक ज्या,** फ्यूचर कम्प्यूटर लर्निंग सेन्टर

जेल रोड, नैनी, इलाहाबाद–8

स्वत्वाधिकारी व प्रकाशक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस, बाई का बाग, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 277 / 486, जेल रोड, चकरघुनाथ, नैनी, इलाहाबाद से प्रकाशित किया।

इस पत्रिका में प्रकाशित किसी रचना लेख, कविता, कहानी आदि के लिए के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार का इससे कोई ताल्लुकात नहीं होगा। न्यायलीय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।

आवश्यक सूचना

लेखको से लेख, कहानियां, रोचक सस्मरण, आदि आमंत्रित है। अपनी रचनाओं के साथ में जवाबी लिफाफा लगाना न भूलें नहीं। नहीं तो प्रकाशित नहीं होने संदर्भ में रचनाओं को लौटाया नहीं जाएगा। रचनाओं को हासियां छोड़कर स्पष्ट शब्दों में लिखें।

# सम्पादकीय

प्रिय पाठक गण

नमस्कार

विश्व स्नेह समाज का द्वितीय अंक आपके हॉथों में सौपते हुये हमें अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। वह इसलिए कि आपलोगों ने पत्रिका का स्वागत जिस गर्म जोशी से किया उसने हमारे पत्रिका परिवार को ऊर्जावान बनाया है। हमारी शक्ति के श्रोत हमारे पत्रिका के पाठक ही है। अतः हमारा सत्त प्रयास रहेगा की आपको आने वाले अंको में पठनीय एवं पाचक सामग्री मिले। नवीन जानकारियां दी जाये। विश्व स्नेह समाज के सदस्यों की संख्या बढ़ रही है, यह पत्रिका के उत्तम भविष्य का परिचायक हैं। यह आपकी है अतः हमें आपके सहयोग की महति आवश्यकता हैं आपके पत्र हमें मिले सुझाव भी उत्तम है और उसे पूर्ण करने के प्रयास में हम निरन्तर अग्रसर है।

कुछ पत्र हमें मिलें है जिसमें 'विज्ञापन' को कम करने कि बात सुझाई गई हैं। दोस्तों! हम इस बार विज्ञापन पहले से कम हो गयें; किन्तु यह आवश्यक भी है। आज का युग विज्ञापन प्रचार का युग है जिससे 'अर्थ–समस्या' जर्बदस्त रुप से जुड़ी है, चल–चित्र, दूरदर्शन, दैनिक–पत्र सभी कुछ में विज्ञापन का समावेश है, और फिर यह पत्रिका तो उन जूझारु नवयुवकों–युवतियों की है जो बेरोजगारी की चोट को सहते हुए भी समाज को चेतनाशील करने में लगे हुये है और रचनात्मक विचारों से नित्य अनगढ़ मूर्तियों का गढ़ने में दत्तचित्त है।

हमारा 'भारत' वर्षो से आंतकी मार को झेलकर टूट चुका था, किन्तु गलत या विध्वसंक विचारो का साथ नहीं दिया, एक जुटता के प्रयास में उसने कारगिल युद्ध के रुप में बहुत कुछ खोया। किंतु अपने आंतर–सघर्ष से टूटा नहीं। अतः सच्चाई का मार्ग कभी मत छोड़ो, सफलता तुम्हें अवश्य मिलेगी। आज अपने ही चक्रव्यूह में शक्तिशाली देश अमेरिका फंस चुका है जिस 'क्रुरराक्षस' को कभी वह अपना अलादीन का चिराग समझता था आज वही उसके सवोच्वता के पत्तन का नियामक बना घूम रहा है। जब पेड़ ही बबूल के बोये गये है तो आम कहा से मिलेंगे। शायद भारत की पीड़ा को अमेरिका अपनी पीड़ा समझा होता तो आज उसे यह दिन न देखना पड़ता। खैर, सत्य की विजय होती है चाहे देर भले हो। तो मित्रों घबरा कर कभी सच्चाई का मार्ग मत छोड़ो, गलत का विरोध करो। तुम्हें सफलता अवश्य मिलेंगी। वर्तमान चीख–चीखकर कह रहा है कि भारत से आंतक अब भविष्य में समूल समाप्त होगा।

युवा साथियों अंत में हमे आपको यह संदेश देना आवश्यक लगा कि चाहे कितनी भी विपरीत परिस्थितियॉ क्यों न हो मनोबल सदैव दृढ़ रखो और श्रेष्ठतम की ओर अग्रसर हो। कोई भी कार्य क्षेत्र हो श्रेष्ठतम का सम्मान अवश्य होता है। प्रकृति का भी यहीं नियम है जो सबसे चुस्त दुरुस्त रहता है वही जीवित हैं। असमर्थ को समर्थ टिकने नहीं देता केवल सर्वाधिक समर्थ को अधिक समर्थ का हीं जीवन निरापद विशेष माना जाता है। श्रेष्ठतम् होने के नाते समाज जिसकी अभ्यर्थना और वंदना करता है, उन युवक युवतियों अनवरत में संघर्ष की अपार क्षमता होती है। लक्ष्य प्राप्ति के प्रति अदम्य साहस से वे सब कुछ दाव पर लगाकर पूर्वाग्रहो रुढ़ियो, अनुपयोगी परम्पराओं से जूझते है। अपनी अदम्य इच्छा शक्ति से वे अपने द्वारा वरण किये गये पथ पर अग्रसर होते है फिर चाहे उस मार्ग पर उन्हें एक मात्र ही क्यों न चलना पड़े।

प्राचीन अथवा प्रस्तुत के प्रतिविरोध प्रगट करने पर समाज उनमें प्रति जिस उपेक्षा एवं प्रतारणा का व्यवहार करता है उसे झेलने का साहस भी उनमें होता हैं।

अतः कुछ कर गुजरने के लिये कुछ खोना पड़ता है, और जब मनचाही मूराद पूर्ण होती है तो खोई वस्तु महत्वपूर्ण नहीं हो तो महत्वपूर्ण वह होता है जिसे आपने पाया है। अपने दृढ़ इच्छा शक्तियों अपने अटल विश्वास ले। एक भुक्त भोगी के हृदय से झरे अल्फाज–

सूर्खरु होता इन्सा ठोकरे खाने के बाद
रंग लाती है हिना पत्थर पे घिस जाने के बाद

अंत में आपके सुझाव हमारे पत्रिका के मार्गदर्शक है, अतः सादर आमंत्रित है। हमारा प्रयास रहेगा कि हम आपके विचारों को मूर्त्तरुप दे सके।

आपकी

**डॉ0 कुसुमलता मिश्रा**

# आतंकवाद पर अमेरिका की दोहरी नीति

*✍ गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी*

वाशिगटन और न्यूर्याक में 11 सितम्बर को हुई विनाशलीला को देखकर समूचा विश्व स्तब्ध रह गया। विश्व व्यापार केन्द्र का ध्वंस, हजारो बेगुनाहो की हत्या और पेंटागन पर हमला, ये सभी ऐसी घटनाएं है जिनकी कभी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। प्रत्येक मानवीय हृदय इन हमलों को टी0वी0 पर देखकर एक बार जरुर कांपा होगा। इस अकल्पनीय विनाशलीला का केवल एक ही उद्देश्य हो सकता था, अमेरिका को यह बताना कि वह अजेय नहीं है, उसका किला अभेद्य नहीं है। उसके नागरिकों पर भी वैसे ही हमले हो सकते है, जैसे दूसरे देशों के नागरिकों पर होते रहे है।

एक पूरानी कहावत है–"जाके पैर न फटी बिवाई, सो क्या जाने पीर पराई"। अमेरिका को इस घटना के बाद पता चला कि आतंकवादी हिंसा का निशाना बनने पर कैसा लगता है। रातोरात वह आतंकवाद का दुश्मन बन बैठा। लेकिन प्रश्न यह उठता है कि विश्व में एक मात्र महाशक्ति होने का दर्प भरने वाले अमेरिका, लादेन को शरण देने वाले अफगानिस्तान को नेस्तनाबूद करने की धमकी दे रहा हैं। लेकिन प्रश्न यह है कि क्या वह आतंकवाद के मार सदियों से झेल रहे दूसरे देशों को इस सिद्धात पर चलने की छूट देगा? कदापि नहीं?

यह सर्वविदित है जब पंजाब में पाकिस्तान के समर्थन से आतंकवादी अभियान चरम पर था, तब अनेक खालिस्तानी नेता अमेरिका, कनाडा तथा अन्य यूरोपीय देशों में ही रह रहे थे और वहीं से इस अभियान को दिशा–निर्देशन कर रहे थे? आज अल–क़ायदा का बिन लादेन तो अमेरिका का ही पाला पोसा एजेंट है जो काश्मीर में भी वरदातें कराता रहा है। जम्मू काश्मीर में चल रही आंतकवादी हिस्सा को अमेरिका के आज के सबसे करीबी पाकिस्तान के स्वयंभू राष्ट्रपति जनरल परवेज मूर्शरफ "आजादी की लड़ाई" आज भी बताकर वैधता प्रदान कर रहे है। हरकतुल मुजाहिदीन, लश्करे तैयबा, जैश ए मुहम्मद आदि पाकिस्तान की धरती पर अपना दफ्तर खोले बैठे हैं। ये सभी गुट भारत में रह रहे मुस्लिम युवाओं को ज़ेहाद के नाम प्रशिक्षण दे रहे है और भारत में आतंकवाद का विनाशक खेल खेल रहे है।

जब कारगिल में भारतीय सेना पाकिस्तानी सैनिकों को खदेड़ने के लिए जीवन–मृत्यु से जूझ रही थी उस वक्त भी अमेरिका भारत पर नियत्रंण रेखा पार न करने का दवाब डाल रहा था और हमारे देश के पिछलग्गू नेता उसे माने भी। क्या उस वक्त अमेरिका को आतंकवाद का ज्ञान नहीं था? अमेरिका के सारे सिद्धात अपने लिए होते है दूसरों के लिए नहीं। उसे किसी भी कार्य को अंजाम देने के लिए विश्व के मान्य संगठन सयुक्त राष्ट्र संघ की जरुरत नहीं पड़ती। वह कभी संयुक्त राष्ट्र संघ तो कभी मानवाधिकार हनन की बात उठाकर भारत को कड़ी कार्यवाही करने से रोकता रहा है। ओसामा बिन लादेन आज का शत्रु उसका ही सोवियत संघ के खिलाफ खड़ा किया गया, पाला पोसा सक्स है। एक अक्टूबर को जम्मू काश्मीर की विधानसभा में अब तक सबसे क्रुरतम हमले में जिसमें 35 लोग मारे गये थे। पर भी अमेरिका बस विरोध जताकर चुप हो गया। अगर वास्तविक रुप से, सच्चे मन से आतंकवाद का विरोधी है तो उसे पाकिस्तान के आंतकवदी ठिकानों पर भी हमले करना चाहिए। आंतकवाद, चाहे वह जिस देश में हो वह गलत है। लेकिन अमेरिका इस हमलें में पाकिस्तान के खिलाफ पर्याप्त सबूत होने के बावजूद पाकिस्तान को दिन–प्रतिदिन पुरस्कृत कर रहा है। यहॉ उसे आतंकवाद नज़र हीं नहीं आता।

भारत ने एक अक्टूबर के हमलें के सन्दर्भ में अमेरिका से कहा भी की वह अपने देश में आंतकवाद खिलाफ अभियान में जम्मू–काश्मीर में सक्रिय

लश्करे–तोयबा, जैश ए मोहम्मद तथा हिजाबुल मुजाहिदीन पर भी प्रतिबंध लगाए। भारत ने इसके लिए पर्याप्त सबूत देने की भी बात कही। अमेरिकी विदेश मंत्री मि0 पावेल को हालकि यात्रा के दौरान दिखाया भी। लेकिन अमेरिका के कान में जू तक नहीं रेंगी। इससे बड़ी अमेरिका की दोहरी नीति क्या हो सकती है।

भारत को चाहिए कि वह भी इस सुनहरे मौके का फायदा उठाकर पाकिस्तान के खिलाफ सख्त से सख्त कार्यवाही करें। भारत को पाकिस्तान के आतंकावादी ठिकानों पर जमकर बमबारी कर उसे तहस–नहस करने का प्रयास करना चाहिए। इससे अच्छा सुनहरा मौंका भारत के लिए और नही हो सकता है। ऐसे मौके पर अमेरिका या विश्व जनमत भी कुछ बोलने में असमर्थ होगा।

## शैतानी कारनामें

**5 सितम्बर 1972**– जर्मनी के म्यूनिख में ओलंपिक के दौरान फलस्तीन के आतंकवादियों ने 11 इस्राइली एथलीटों को ओलंमपिक गांव में बंधक बना लिया।

**21 दिसम्बर 1975**–वियना, ऑस्ट्रिया में चल रहे ओपेक सम्मेलन मे कारलोस द जैकाल और उसके पापुलर फ्रंट फॉर दी लिबरेशन ऑफ फलस्तीन ने 11 तेल मंत्रियों और 59 नागरिकों को बंधक बना लिया, इन्हें छोड़ने के बदले आतंकवादियों ने लाखों डॉलर की फिरौती वसूली।

**23 जून 1985**–अटलांटिक महासागर के ऊपर एयर इंडिया के बोइंग 747 कनिष्क विमान को बम से उड़ा दिया गया। खालिस्तान लिबरेशन फोर्स को इसका दोषी ठहराया गया।

**21 दिसम्बर 1989**–लॉकरबी, स्कॉटलैड के आकाश में लीबियाई खुफिया विभाग के दो कर्मचारियों ने पैन–एम–बोइंग 747 को बम से उड़ा दिया।

**19 अप्रैल 1994** एक शक्तिशाली ट्रम बम ने अमेरिका के ओकलाहोमा शहर की फैडरल बिल्डिंग को नष्ट कर दिया। टिमोथी मैक विग और टैरी निकल्सन जैसे अतिवादियों को गिरफ्तार कर लिया गया।

**7 अगस्त 1998** केन्या के नैरोबी और तंजानिया के दार–अस–सलाम में अमेरिकी दूतावासें में बम विस्फोट करके उन्हें भारी नुकसान पहुँचाया गया। ओसामा बिन लादेन पर इसका आरोप है।

**10 अगस्त 2001** अंगोला के दक्षिणी शहर लुआंडा में यूनिटा विद्रोहियों ने यात्री रेलगाड़ी पर हमला किया। अंगोला में लंबे समय से चल रहे गृह युद्ध की यह अब तक की सबसे खूनी त्रासदी थी।

# आतंक का पर्याय
# विश्व के दुर्दांत आंतकवादी गिरोह

**अल–क़ायदा**–सऊदी अरब निवासी ओसामा बिन लादेन ने सुन्नी आंतकवादियों को क जुट करने के लिए इसे बनाया। इस गुट का उद्देश्य गैर इस्लामी सरकारों को खत्म करके दुनिया भर में अखिल इस्लामी राज्य क़ायम करना है। एक अरब पति परिवार में जन्में बिन लादेन की सम्पति लगभग 30 करोड़ डालर के लगभग मानी जाती है, जिससे वह अल क़ायदा की मदद करता है। इसके अतिरिक्त उसके समर्थक भी इसकी मदद करते है।

**एल.टी.टी.ई.**– 1976 में स्थापित यह संगठन एक स्वतंत्र तमिल राज्य बनाने के लिए पैसा और हथियार जुटाता है। उत्तरी अमेरिका, यूरोप और एशिया में रहने वाले तामिल समुदायों से भी इसे मदद मिलती है। मुक्ति चीतो ने 1983 में श्रीलंका सरकार के खिलाफ सशस्त्र संघर्ष शुरु किया। इसके सदस्यों की सही सख्या का आंकलन नहीं है। लेकिन श्रीलंका में इसके लगभग 8000–10000 लड़ाकू है। ये आत्मघाती हमलों के लिए जाने जाते हैं। उत्तरी और पूर्वी तटीय क्षेत्रों पर इनका नियत्रंण है।

**हमास**– यह सभी अतिवादी फिलस्तीनी समूहों का वैचारिक संगठन है। लेकिन माना जाता है कि आंतरिक संघर्ष और घटते बाहरी समर्थन की वजह से यह कमजोर हो गया है। यह इज्रायल के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करता। इसे विदेशों में बसे फिलिस्तीनियों स, इरान, सऊदी अरब से आर्थिक सहायता प्राप्त होती है।

**हिज्जबुल्लाह**–हिज्जबुल्लाह यानी खुदा की पार्टी का गठन लेबनान में कट्टर शिया मुसलमानों ने किया। इसका क्षेत्र वेक्का घाटी, बेरुत के दक्षिणी इलाके, लेबनान के दक्षिणी इलाका है। इसका मुख्य उद्देश्य लेबनान में राजनीतिक ताकत बढ़ाना और इज्रायल का विरोध करना है।

**हरकत–उल–मुजाहिदीन**–पूर्व में हरकत–उल–अंसार के नाम से जाना जाने वाला इस्लामी संगठन हरकत उल मुजाहिदीन मुख्य रुप से पाकिस्तानी संगठन है। इसका नेता फजलुर रहमान खलील है। इसी वर्ष फरवरी में खलील ने प्रमुख पद को छोड़कर संगठन की कमान फारुख काश्मीरी को सौंप दी और खुद संगठन का महासचिव बन गया है।

इस संगठन ने काश्मीर में भारतीय सैनिकों और नागरिको पर अनेक हमले किए। इसका सीधा संबंधा काश्मीर में आंतकी संगठन अल–फरान से है। इसे सऊदी अरब, खाड़ी के देशों और अन्य इस्लामी देशों से आर्थिक और सैन्य सहायता मिलती है।

**लश्कर–ए–तैयबा**– यह पाकिस्तान के धार्मिक संगठन मरकज–उद–दावा–बल–ईशाद की सशक्त शाखा है। इसका संगठन 1989 में किया गया था। इसका आंतकवादी क्षेत्र भारत है। इसका नेता हफ़ीज मुहम्मद सईद है।

यह काश्मीर में सैनिक और नागरिक ठिकानों पर 1993 से लगातार हमले करता आ रहा है। अगस्त में काश्मीर में 8 अलग–2 हमलों में लगभग 100 लोग मारे गये। इसे पाकिस्तानी उद्योगपतियों और विदेशों मे रह रहे पाकिस्तानियों से आर्थिक सहायता मिल रही है। इसके दुनिया भर के सभी इस्लामी आतंकवादियों से रिश्ते है।

**जैश–ए–मुहम्मद**– यह पाकिस्तान का आंतकवादी इस्लामी संगठन है। इसके सदस्यों की संख्या बड़ी तेजी से बढ़ रही है। हरकल–उल–अंसार के नेता मौलाना मसूद अजहर ने इसे संगठित किया था। इसका मकसद काश्मीर का पाकिस्तान में विलय करना है।

इसे हरकत–उल–जेहाद–अल–इस्लामी और हरकत–उल–मुजाहिदीन से हर तरह की सहायता ओसामा बिन लादेन से भी आर्थिक मदद मिल रही है।

# अधिकार, कर्त्तव्य और राष्ट्रवाद

✍ ज्ञानेन्द्र सिंह, एडवोकेट हाईकोर्ट

आये दिन मौलिक अधिकारों और उनके हनन का आरोप एवं उन्हें प्राप्त करने के लिए सक्षम न्यायालयों में याचिकाओं के दायर करने का दृश्य देखने को मिलता हैं। परन्तु दुर्भाग्यवश भारत के बारे में यदा–कदा भी कारवाई का समाचार पढ़ने तक को भी नहीं मिलता। लगभग हर मुद्दे को सांसदों द्वारा संसद में उठाने का क्रम कई दशकों से जारी है। पर मूल कर्त्तव्यों को लेकर पता नहीं हमारें सांसदों की जुबान संसद में क्यों नहीं खुलती? भारतीय संविधान के भाग4(क)वर्णित अनु0 5 1 (क) में मूल कर्त्तव्यों का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि "भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्त्तव्य होगा कि वह (क) संविधान का पालन करे और उसमें आदर्शो, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे (ख) स्वतंत्रता क लिए हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शो को हृदय में सजोये रखे और उनका पालन करे, (ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखण्डता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखे, (घ)देश की रक्षा करे और आहवान किये जाने पर राष्ट्र की सेवा करे (ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध हो (च) हमारी सामाजिक संस्कृति की गौरवशाली परम्परा का महत्व समझे और उसका परीक्षण करे (छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अन्तर्गत वन, सील, नदी, और वन्य जीव है, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दया भाव रखे (ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे, (झ) सार्वजनिक सम्पति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे, (न)व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरन्तर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नयी ऊचाइयों को छू ले।

संविधान निर्मात्री सभा ने मूल–कर्त्तव्यों को संविधान का भाग बनाने पर विचार करते समय यह भाव निश्चित रुप से प्रकट किया था कि मूल कर्त्तव्यों का पालन प्रत्येक नागरिक द्वारा करने पर भारत एक सशक्त राष्ट्र के रुप में उभरेगा। यदि भारत का प्रत्येक नागरिक भारत की प्रभुता, एकता और अखण्डता की रक्षा करें और उेस अक्षुण्ण रखे तो फिर देश में कभी भी, कहीं भी अलगाववादी एवं उग्रवादी आन्दोलन एवं घटना क्रम घटित नहीं होते। देश के सीमान्त प्रदेशों में विदेशी ताकतों की मदद से पृथकतावादी आन्दोलन हिंसा में परिवर्तित होते–होते भारत माता के हजारों सपूतों को निगल गये है। संविधान के पालन करने के मूल कर्त्तव्य का यदि पालन होने लगे तो विश्व में हमसे श्रेष्ठ और शक्तिवान और कोई देश नहीं हो सकता।

भारत की संसद के लिए सर्वाधिक महत्व का विषय यह है कि संविधान में वर्णित मूल कर्त्तव्यों को आदेशात्मक एवं बाध्यकारी बनाया जाय। मूल कर्त्तव्यों के पालन न करने पर भारतीय संविधान में कोई भी दण्डात्मक प्रावधान नहीं है। कई बार तो यह भी प्रश्न खड़ा किया जाता है कि क्या

मूल कर्त्तव्यों का जिस प्रकार संविधान में समावेश किया गया है वह न्यायसंगत है? यदि मौलिक अधिकारों को प्राप्त करने के लिए संविधान की व्यवस्थाओं के अनुरुप न्यायालय का दरवाजा नागरिक द्वारा खटखटाया जा सकता है तो मूल कर्त्तव्यों का पालन वैधानिक प्रावधानों द्वारा क्यों नहीं किया जा सकता? सांसदों के लिए यह भी विचारणीय बिन्दु है कि क्या वे वैभवशाली भारत के निर्माण के लिए संविधान संशोधन द्वारा एवं शासन व्यवहार द्वारा मूल कर्त्तव्यों के पालन को सुनिश्चित कराने की व्यवस्था करेंगे। संविधान में वर्णित मूल कर्त्तव्यों का अधिसंख्य नागरिको द्वारा पालन न करने पर क्या उनके नागरिक अधिकारों में कटौती में प्रावधान पर विचार किया जा सकता है? इस पर भी विचार करना होगा। कुल मिलाकर 21 वीं शताब्दी राष्ट्र भक्ति, राष्ट्रीयता एवं मूल कर्त्तव्यों के पालन की हो, इस हेतु हम सबको मिलकर सामूहिक प्रयास करना होगा।

# ग़ज़ल

राजेन्द्र प्रसाद सोनकर

ले आई है जिन्दगी, ऐसे मोड़ पर,
कि चारों तरफ रुसवाइयॉ है।
रह रहा हूँ, भीड़ में दुनिया के
मगर दिलों जान में तन्हाइयॉ है
जो कभी हमें ऑखों का नूर कहते थे
है आज उन्हें नफरत हमारी परछाइयों से
वाकिफ न हो सके उनके दिल के अरमानों से
समझ न सके वो हमारे जजबातों को
इसी कशमकश में रिश्तों के बीच बन गई खाइयॉ
ले आई है जिन्दगी, ऐसे मोड़ पर
कि चारों तरफ रुसवाइयॉ है।

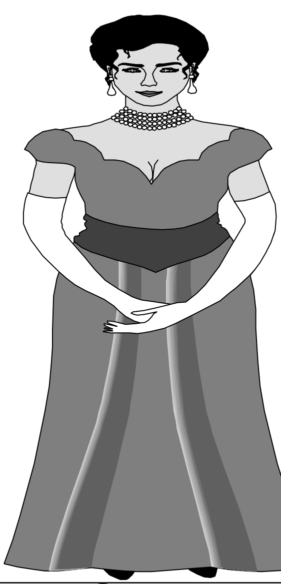

## "बड़े लोगो की बातें"

बुराई देखने वाला हमेशा घाटे में रहता है। महात्मा बुद्व

बदी के मौके बार बार मिलेंगें नेकी करने का मौका बहुत कम मिलता है।
वाल्टर

जिस घर की औरत उदास रहती है वहाँ खुशियां कभी नही आती।
शेक्सपियर

औरत त्याग ओर अहिंसा की मूर्ति है।
महात्मा गांधी

***दुनिया में जिससे दोस्ती करो उसे बचाने के लिये दिलो जान से हमेशा तैयार रहो क्योकि दोस्ती इम्तिहान लेती है।***

# प्यार के दो पल

बात उन दिनों की है जब मै गर्मी की छुट्टियां बिताने अपने गांव ककीला गया था। जो आरा जिला के जगदीशपुर थाना में है। अपने गांव पहुंचकर मुझे बहुत खुशी हुई क्योंकि पुरे एक साल

बाद मैं अपने बिछड़े हुये दोस्तों से मिला था। मेरा स्वभाव शोक चंचल होने के कारण सभी दोस्त मुझे बहुत चाहते थे। एक बार मैं और मेरा दोस्त आपस में यूँ ही बात कर रहे थे कि अचानक मेरी नज़रों ने एक सुन्दर सी लड़की को देखा। जिसकी झील सी ऑखों, गुलाब के पंखुडियों जैसे होठ, बिखरे–बिखरे बाल, जिसे देखकर इन्सान तो क्या फरिश्ते भी बहक सकते थे। सचमुच बड़े ही फुर्सत से बनाया था उसे बनाने वाले ने। मेरा दिल तो उसे देखकर ये कह पड़ा–

अच्छी सुरत को संवरने की जरुरत क्या है,
सादगी भी तो कयामत की अदा होती हैं।

इस लड़की को इससे पहले अपने गांव में कभी नहीं देखा था। वो लड़की भी छूट्टियों में घुमने अपने मामा के यहॅा आई हुई थी। जब मैने अपने दोस्तों से इस लड़की के बारे में पूछा तो बताये कि ये लड़की भभुआ जिले के डुमरी गांव की है। लेकिन उसके पापा की पोस्टिंग मध्य प्रदेश में बिलासपुर में था। जिसके वजह से ये लोग वहीं रहते थे।

पता नहीं, क्यों मैं जब भी उस लड़की को देखता था उसकी तरफ खीचा चला जाता था जबकी हम दोनों एक दूसरे के लिए अजनबी थे। फिर भी ऐसा महसुस होता था कि हम दोनों एक दूसरे के लिए अजनबी को अच्छी तरह जानते है और हम दोनों के बीच कोई ना कोई रिश्ता है। फिर क्या था मैं इस रिश्ते की तलाश में भटकने लगा। मैं चाहता था कि उससे कुछ कहूं लेकिन चाहते हुए भी उसे कुछ कह नहीं सकता था।

ना पकड़ सके हांथ ना थाम सके दामन
बड़े करीब से उठकर चला गया कोई।

अब मेरी हालत एक मरीज की तरह हो गई थी। ना ही भुख लगता था ना हीं प्यास और ना हीं सकुना मिलता था बस हमेशा वही मासुम सा चेहरा मेरे ऑखों के सामने दिखाई देता था। तभी मैंने ये सोचा की मुझे इस लड़की से मिलना चाहिए नहीं तो मेरी जिन्दगी में क्या लग जाएगा। तभी मैं उस सहेली से मिला और मैनें उससे बताया कि मैं उस लड़की से मिलना चाहता हूँ तो वो लड़की बोली ठीक है, मिल लिजिएगा। मैं उसके जबाब के इंतजार में था कि क्या होता है। लेकिन ना ही वो हां बोली और ना ही नां और अंत में मायुसी हाथ लगी फिर भी मैं हिम्मत नहीं हारा क्योंकि ये हादसा मेरी जिन्दगी में पहली बार हुआ था और मैं इसे किसी भी कीमत पर पाना चाहता था। इससे पहले मेरे साथ ऐसा कभी नही हुआ था। मैं हमेशा अपने आप को जैक ऑफ आल ट्रेड समझता था और मेरे दिमाग में बस एक ही सोच बैठी थी–

ना किसी का दिल मुझे चाहिए ना किसी की तलाश,
मेरा राजे दिल जो समझ सके मुझे उसी की तलाश है।

लेकिन इस हादसे के बाद लगा की मेरी तलाश खत्म हुई और यही है वो लड़की जो मेरा राजे दिल समझ सकती है। मैंने सोच लिया बस यही है मेरी मंजिल। लेकिन ये मंजिल मेरे पास होते हुए भी मुझसे बहुत दूर था फिर भी मैं हर वक्त इसे पाने के नये–नये तरीके ढुढता रहता था क्योंकि बस थोड़े ही दिन बाकी रह गये थे छुट्टियों के खत्म होने में। मैं ये सोच–सोच कर घबड़ा रहा था कि फिर ये लड़की हमें मिलेगी या नहीं और फिर एक–एक दिन करके सारी छुट्टियां समाप्त हो गई और दिल में दर्द, ऑखों में अश्क लिये अपने आने की तैयारी करने लगा।

ना जी भर के देखा ना कुछ बात की,
बड़ी आरजू थी मूलाकात की।

फिर मै अपने गांव स इलाहाबाद के लिए चल दिया और गाड़ी में आकर बैठे तो देखा की पल भर सब कुछ बदल गया। मैं जिस गाड़ी में था उस गाड़ी में वो लड़की भी थी। मूझे तो विश्वास नहीं हो रहा था मुझे

लग रहा था कि यह एक हसीन सपना है। मेरे दोस्तों ने मुझे बेस्ट ऑफ लक कहकर विदा किया। और मैंने भी थैक्स गाड कहा क्योंकि जिस काम को मैं एक महीने में ना कर सका वो काम खुदा ने एक पल में कर दिया। मुझे जिस रुट से जाना था उसी रुट से उसे भी जाना था। फिर क्या था हमलोग साथ हो लिये फिर एक दूसरे से इन्ट्रोड्यूस हुये और फिर बातचीत का सिलसिला जारी हुआ लेकिन वक्त जिसपर किसी का अधिकार नहीं होता। वक्त इस तरह से कटा की कुछ पता हीं नहीं चला सफर कब खत्म हुई। लेकिन ये क्या हम दोनों के ऑखों में तो आंसू में जूदाई के आंसू साफ झलक रहे थे। मै ये सोचा कि मेरी ऑखों में तो आंसू इसलिये है कि मैं अपने प्यार से जुदा हो रहा हूँ लेकिन उसके ऑखों में आंसू क्या उसने भी मूझे अपना दिल दे दिया। मैं इसी कसमकस में था कि वह स्टेशन आ गया जहॉ उसे उतरना था फिर हम दोनों एक दूसरे से जुदा हो लिये और मेरे दिल से ये सदा आई–

दूर रहकर भी तेरी यादों को पुजुंगा मैं
कभी ये ना कहना कि मुझे आदाबे वफा नहीं आता।

कुछ घण्टों के बाद मैं भी अपने मंजिल को पहुँच गया। कुछ दिन तक तो बीते हुए पलों के खट्ठे मिठे याद आते रहे कि अचानक उसका पत्र आया जिसमें उसने प्यार का इजहार कुछ इस तरह से किया था–

आप से शब्दों का नहीं आत्मा का रिश्ता है मेरा
आप मेरे सांसो में बस गये है खुशबू की तरह

हम दोनों पत्र के द्वारा ही एक दूसरे को चाहते रहे। अपने सोच विचार एक दूसरे को पत्र से ही बताते रहे। हम दोनों के विचार एक दूसरे से काफी मिलते थे औश्र धीरे–धीरे मैंने उसे अपनाने को सोच लिया और दिल ने सपने संजोने शुरु कर दिये क्योंकि मेरी सोच हमेशा पाजीटीव होती है। लेकिन ये सोचकर मेरे खुशियों को क्या लग गया कि अभी मुझे पढ़ लिखकर कुछ बनना है। अपने पैरेन्ट्स के सपनों को साकार करना है और फिर जीने के लिए पैसे और प्यार दोनों की जरुरत होती है। प्यार तो प्रकृति की देन है लेकिन पैसे कमाने के लिए मेहनत करना पड़ता है। जो अभी मैं कर रहा

हूँ। मुझे ऐसा लगने लगा की वक्त और हालात दोनों मेरे साथ छोड़ने लगे है। अचानक उसका पत्र आया की मेरे घर के लोग मेरे लिए लड़का ढूँढ़ लिये है जो एअर फोर्स में है। मैं क्या करुँ मैं कोई फैसला ले नहीं पा रही हूँ, आप कुछ कीजिए। इतना जल्दी तो मैं कोई कदम उठा नहीं सकता था लेकिन सोचने पर मजबूर हो गया और ये फैसला किया कि मेरा प्यार खुश रहे तो हम भी खुश रहेंगे। वो लड़का सर्विस में है वो इसे हर खुशी दे सकता है और फिर प्यार का दूसरा नाम तो कुर्बानी है। क्या मैं अपने प्यार के खुशी के लिए इतना भी नहीं कर सकता। जब मजनू को लैला नहीं मिली, फरहाद को श्री नहीं मिली, रांझा को हीर नहीं मिली तो मुझे भला वो कैसे मिल सकती थी। वक्त ने मुझसे ऐसा मुह मोड़ा की मेरे सारी खुशियॉ, मेरे सारे सपने जो उसके लिए सजो रक्खे थे, का कतल हो गया। मैंने सोचा शायद मेरी किस्मत में वही प्यार के दो पल थे–

मेरे सांसो को ना दो जिन्दगी का नाम,
जीने के बावजूद भी कुछ लोग मर गये।


**मानव सेवा ही ईश्वर सेवा है** **मानव सेवा ही ईश्वर सेवा है** **मानव सेवा ही ईश्वर सेवा है**

**एक रुपये** पान/गुटखे खाते है और **थुक** देते है 0 **एक रुपये** सिगरेट खरीदते है और हवा में उड़ा देते हैं 0 10 से 10000 रुपये की **शराब खरीदते** है और **बहा** देते है

अगर आप इन पैसों/रुपयों को संजोये तो आप किसी की जिन्दगी सवार सकते है तो देर मत कीजिए इससे पहले की

0 किसी गरीब की बेटी अनब्याही रह जाये, 0 कोई बच्चा भूख से तड़प कर मर जाए

0 कोई बृद्ध असहाय होकर ठोकरे खाये 0 कोई बच्चा निरक्षर रह जाए

विगत पॉच वर्षो से समाज सेवा के पूर्णतः समर्पित

# जी.पी0एफ0सोसायटी

आपसे विभिन्न स्थानों पर संचालित

0 अंध विद्यालय 0 विकलांग केन्द्र 0 शिक्षा केन्द्र के लिए आर्थिक/समाजिक/शारीरिक/कपड़े या अन्य सामग्री की सहयोग की अपील करता है।

प्रस्तावित अनाथालय व बृद्धआश्रम : ग्राम –टीकर, पोस्ट–टीकर, (पैना)
जिला –देवरिया

## आप हमें लिखें/अपना सहयोग भेजें–

प्रधान कार्यालय
एफ0सी0एल0सी0
277/486, जेल रोड, चकरघुनाथ,
नैनी, इलाहाबाद–8

शाखा कार्यालय
एम0टेक0 कम्प्यूअर एजुकेशन सेन्टर
घुरसा, कौशाम्बी रोड, इलाहाबाद

# त्वचा को सुन्दर कैसे बनाये?

जो कुछ हम चाहते हैं या महसूस करते हैं उसका त्वचा पर सीधा असर पड़ता है। रोंमाच होने पर रोंगटे खड़े बाल, इसका एक छोटा सा उदाहरण है। किसी विशेषज्ञ ने त्वचा को इन्द्रियों को एन्टिना कहा है।

खुश होने पर त्वचा चमकने लगती है, शर्म महसूस होने पर चेहरा गुलाबी हो जाता है। किसी परेशानी में चेहरे पर दाने उभर जाते हैं। किसी के रोने पर चेहरे की मांसपेशियां तन जाती है। रोमछिद्र सिकुड़ जाते है और वह सफेद सी दिखने लगती है।

उसका चेहरा शर्म से लाल हो गया, भय से पीला पड़ गया, दुःख से सफेद हो गया या नीला पड़ गया। ये सारे मुहावरे त्वचा की इतनी संवदेनशीलता के कारण की गढ़ लिए गये हैं।

भावनाओं और मानसिक तनाव के कारण कई त्वचा रोग जैसे–दाने, मुहांसे, झाइयां या एक्जिमा हो सकता है। चेहरे पर असमय झुर्रिया पड़ सकती हैं तथा बाल सफेद हो सकते हैं।

हमारे मस्तिष्क और त्वचा का संबंध भ्रूण अवस्था से ही कायम हो जाता है। इस अवस्था में फौरन ग्रहण करती है और उस पर उसका असर दिखलायी पड़ता है। आवाज की ध्वनि भी तेज रफ्तार से त्वचा मस्तिष्क के संदेशो को ग्रहण करती है।

आमतौर पर हम त्वचा को केवल एक ऊपरी आवरण समझकर उसे चमकाने और जवान रखने के प्रयत्न में लगे रहते है लेकिन यह नहीं जानते कि यह एक बेहद संवेदनशील भावानात्मक बैरामीटर है।

जब कभी त्वचा शुष्क हो जाती है और उस पर से पपड़ी उतरने लगती है तो हम मौसम, किसी प्रसाधन या अपने हाजमें को कोसने लगते है लेकिन इसके वास्तविक कारण है, तनाव, नर्वसनेस, उदासी और चिन्ता जो हमारी त्वचा को बदरंग व कान्तिहीन बनाती है।

जब मन प्रसन्न रहता है तो त्वचा भी तनाव रहित रहती है। रोमछिद्र खुले रहते हैं। रक्त प्रवाह ठीक रहता है और चेहरे पर स्वास्थ्य की आभा दमकती है। तेल का उत्पादन सामान्य होता है मांसपेशियां तनाव रहित रहती है। त्वचा चिकनी जवान और जानदार लगती है और रंग भी साफ नजर आता है।

इन सभी बातों के आधार पर ही तो कहा जाता है कि "खुश रहिए" विशेषज्ञ भी कहते है कि "उम्र का ताल्लुक दिमाग से होता है।"

शोध के अनुसार आपकी भावनायें रक्त संचार, नसों को संतुलन, हाजमें और हार्मोनल स्त्राव को प्रभावित करती है।

क्रोध को ही लीजिए। किसी भी अन्य कारण की अपेक्षा क्रोध आपकी उम्र मिनटों में बढ़ देता है। झगड़े के बाद जरा शीशे में जरा अपना चेहरा देखिए फौरन पता चल जाएगा। उदासी, दुःख या निराशा से चेहरा लटक जाता है और खुशी में चमकने लगता है।

त्वचा के रंग रुप और स्वास्थ्य पर हार्मोन्स का भी बड़ा असर होता है। हार्मोन्स शरीर में एक प्रकार की स्वनिर्मित औषधि होती है। जब कभी तनाव अधिक होता है तो यह जरुरत से ज्यादा बनने लगते है और इसका प्रतिकूल प्रभाव त्वचा पर दिखने लगता है।

एक्ने को बढ़ावा देने वाला टेस्टोस्टेरोन हार्मोन भावानात्मक तनाव के कारण अपना उत्पादन बढ़ा देते है और मुंहासे बढ़ जाते है। मुंहासे पर तो तनाव का सीधा असर पड़ता ही है। तनाव का सीधा असर सेक्स ग्रंथियों, मासिक चक्र और हार्मोन्स पर भी पड़ता है। आस्ट्रोजन ही त्वचा को सुन्दर, पुष्ट और लचीला तथा जवान रखता हैं।

एक्ने को बढ़ाना देने वाला टेस्टोस्टेरोन हार्मोन भावनात्मक तनाव के कारण अपना उत्पादन बढ़ा देते है और मुंहासे बढ़ जाते है। मुंहासों पर तो तनाव का सीधा असर पड़ता ही है। तनाव का सीधा असर सेक्स ग्रंथियों, मासिक चक्र और हार्मोन्स पर भी पड़ता है। आस्ट्रोजन ही त्वचा को सुन्दर, पुष्ट और लचीला तथा जवान रखता हैं

सुखी पारिवारिक जीवन का उपभोग करने वाले पति–पत्नी या प्रेम सागर में डूबे प्रेमी–प्रेमिका एक दूसरे तथा जमाने की नजरों में इतने आकर्षक और चुस्त इसीलिए नजर आते हैं कि उनका भावानात्मक संसार व्यवस्थित है और उनकी त्वचा पर इसका अनुकूल असर होता है।

भावनाओं और त्वचा का गहरा संबंध है। यदि कभी आप देखें कि शारीरिक रुप से स्वस्थ रहने पर भी आपकी त्वचा बेजान सी है या वह विकृत हो रही है तो संभव है कि आपका भावानात्मक संतुलन ठीक नहीं हो।

अपने विचारों को नियन्त्रित रखकर आप एक बेहतर व खुशमिजाज व्यक्ति बनने का भरपूर प्रयास कर सकती है।

## आवश्यक सूचना

दोस्तो हम इस अंक से एक नया स्थाई स्तम्भ प्रारम्भ करने जा रहे है। जिसमें आप अपने इष्ट मित्रो, रिश्तेदारों, सहयोगियो इत्यादि को ईद/दिवाली/दशहरा/क्रिसमस/जन्मदिन/शादी/शादी वर्षगांठ/होली/परीक्षा पास करने पर/नौकरी प्राप्त करने पर/ प्रमोशन इत्यादि पर बधाई संदेश भेजना चाहते है तो आपको अपना संदेश, संदेश प्राप्त करने वाले व्यक्ति का पता व 25.00 रुपये मात्र देना होगा। अगर आप फोटो भी छपवाना चाहते है तो आपको 50.00रुपये व फोटो देना होगा। आपका संदेश पत्रिका में छपेगा और पत्रिका परिवार उस अंक को आपके द्वारा दिये गये पते पर डाक से भेजने की व्यवस्था करेगा।

प्रापक नामः ...................................... प्रापक का पता :............................

संदेश : ..........................................................................................................

भेजने वाले का नाम व पता : ............................................................................

बरकरार रखने में तत्पर रहना है। क्योंकि यही भविष्य निर्माता है।

आज की शिक्षा के दयनीय स्वरूप का और अधिक अतिरंजित करने में हमारे विद्यार्थी पीछे नहीं हैं। जो अपने बहुमूल्य समय जबकि उन्हें अपने व्यक्ति अध्यात्मिक स्वरूप को संवारने के अलावा अन्य बातों को सोचने तक का समय नहीं हैए उसी समय वे समाज के निन्दित व्यक्तियों और राजनेताओं के हाथ की कठ पुतली बनकर वे सभी कार्य जो उन्हें आगामी जीवन में करने हैं शिक्षा काल में ही करने लगे हैं जिससे ज्ञान की जगह अज्ञानता, विनय की जगह उद्दण्डता और चरित्र हीनता के अलावा कुछ भी नहीं मिल पाता तथा उनका भावी जीवन शोचनीय और समाज पर भार स्वरूप हो जाता है। इसकी जगह यदि वे अपने विद्यालय और शिक्षकों के प्रति आस्था भाव बनाकर केवल अपनी शिक्षा पूर्ण करे तो उनका भावी जीवन समाज में आदर्श बनेगा तथा वे समाज और राष्ट्र की अमूल्य निधि बनेगें इसमें संदेह नहीं है । आज भी यदि राजनीतिज्ञ, अभिवावक शिक्षक, प्रबन्ध समिति तथा विद्यार्थी के साथ साथ शिक्षा प्रणाली में सुधार हो जाय तो निसंदेह भारत विश्व में अपना खोया सम्मान विश्वगुरू का पुनः प्राम्त कर सकता है। तथा स्नातक डकैती करने छात्रायें काल गर्ल बनने से रूक सकती है। किन्तु इसकी परवाह किसको है। यहाँ तो समाज सुधारंको को एयर कन्डीशन बंगलों में शराब के प्यालों से फुर्सत कहाँ है। सत्य कटु होता है क्षमा प्रार्थना के साथ राष्ट्र निर्माताओं से नम्र निवेदन है कि अभी भी कुछ बिगड़ा नहीं है, शिक्षण संस्थाओं की स्वायत्तता प्रदान करते हुये शिक्षण प्रणाली में आवश्यक सुधार द्वारा भारत को पुनः विश्वगुरू बनाने में सहयोग करें तथा शिक्षा ग्रहण करे अपने अतीत से जो आज भी अतीताकाश में नक्षत्र की तरह जाज्वल्य मान है।

# पत्रकारिता और आप का कैरियर

*मिथिलेश प्रसाद द्विवेदी*

नीद खुली और दौड़ पड़ते है हम बरामदे की ओर आज की ताजा खबर जानने को। हर तरह के समाचारों से अवगत कराता यह चन्द पन्नों का समाचार पत्र तरह तरह की घटनाओ और कहानियों का मिलाप है। आज उस घटना का क्या हुआ, जिसकी जांच कल पूर्ण रूप से नही हो पायी थी या फिर आज कोई ऐसी घटना घटी हो, जो वाकई में सिहरन पैदा करने वाली हो, सिनेमा प्रेमी, सिनेमा की जानकारी लेते है अन्ततः हम अखबार के पूरे पत्रों पर नजर दौड़ा ही देते हैं। हर लोंगो के मन मे यह बात आवश्य ही उठती होगी कि आखिर ये पत्रकार लोग समाचारों को किस तरह सबके सामने प्रस्तुत करते हैं। आज प्रत्येक क्षेत्र मे जैसे जैसे आधुनिकता वढ़ती जा रही है उसी प्रकार अपने कैरियर को किस मोड़ पर लगाया जाय यह समस्या बन गयी है। हालांकि पत्रकारिता पहले एक मिशन का रूप था मगर आज एक पेशे के रूप मे बदल गयी है। पत्रकारिता का अपना कैरियर बनाना वाकई मे एक प्रतिष्ठित पेशा है। हमारे देश के कई साहित्यकार भी अच्छे पत्रकार रह चुके है जैसे प्रेमचन्द्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी, शिवपूजन सहाय रामवृक्ष बेनीपुरी आदि । प्रथम प्रधान मंत्री जवाहर लाल नेहरू भी स्वतंत्र पत्रकारिता करते थे। महात्मा गाँधी भी पत्रकार थे। आज के युग मे कई बड़े–बड़े पत्रकार हैं, जो अपना अलग ही स्थान बना चुके हैं।

चूँकि पत्रकारिता का पहला और महत्वपूर्ण गुण यह है कि इसके लिये हमे पूर्ण रूप से समर्पित होना पड़ता है। यह एक ऐसी विधा है, जहाँ सिर कटा कर ही जाना है तो फिर सिर कटने की चिन्ता नही करनी चाहिए। यानी आमदनी के लिये इसमे आश्रित हो भी सकते है और नही भी।

एक पत्रकार बनने के लिये कोई महिला या पुरूष का स्नातक होना जरूरी है। प्रतिष्ठा का विषय जैसी बाध्यता कुछ भी नही है। हिन्दी या अंग्रेजी या दोनो ही भाषाओ पर अधिकार होना चाहिए। वैसे सिर्फ हिन्दी मे पत्रकारिता की जा सकती है, मगर अंग्रेजी जानना बहुत जरूरी है। सामान्य ज्ञान के अन्तर्गत राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय घटनाओं की जानकारी होना भी अतिआवश्यक है।

इसके अलावा जो लोग पत्रकारिता को अपना कैरियर बनाना चाहते है, इसके लिये यह जरूरी है कि वह पहले किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से पत्रकारिता की डिग्री हासिल कर लें। चूंकि पहले के पत्रकार इस तरह की डिग्री नही लिया करते थे, मगर आज के दौर मे उसके अलावा टंकन, शार्टहैण्ड और कम्प्यूटर डिग्री ले ली हो तो सोने पे सुहागा वाली बात हो जायेगी। इन सब योग्यताओं के बावजूद आपके पास अगर लिखने की शुद्ध शैली न हो तो पत्रकारिता का कोई अर्थ ही न हो। वैसे इस पेशे मे पूरी सफलता अपने अध्ययन, लेखन और ज्ञान के अलावा आप कितने लोगो को जानते है तथा आज की सामाजिक स्थिति क्या है, इन सभी बातो का होना जरूरी है। यदि आप पूर्ण पत्रकार बनने योग्य है तो चलिये किसी अखबार के सम्पादक से मिलने। वैसे आपको उस अखबार मे प्रवेश मिलेगा या नही यह सिर्फ सम्पादक निर्णय करता है क्योकि सम्पादक ही है जो कि अखबार का कर्ता धरता है। यदि आपका चयन हो गया तब आपकी योग्यता के अनुरूप आपको editing या reporting विभाग मे भेज दिया जायगा। reporting विभाग मे सारे field worker होते है यानी इनका काम जगह जगह से समाचारो को इकठ्ठा करना होता है। चुंकि इसमे भी कई पद होते है और सभी को अपना अपना काम होता है। दूसरा विभाग मेकप यानी अखबार को जिस रूप मे देखते है उसका निर्माण विभाग। मेकप है इस मे कई अलग अलग पद है। लगभग सभी ही का एक ही काम होता है यानी समाचारो को एक सही ढ़ंग मे प्रस्तुत करना। इन दोनो विभागो मे कर्मचारियो को उनकी योग्यतानुसार अलग अलग विषयो पर काम दे दिया जाता है।

यह तो थी अखबार से जुड़कर पत्रकारिता करने की बात। इसके अलावा आप स्वतंत्र पत्रकारिता भी कर सकते है। स्वतंत्र पत्रकारिता यानी बिना किसी समाचार पत्र से जुड़े पत्रकारिता करना। इसके लिये आप अपना लेख या कहानी किसी भी अखबार के संपादक को भेजिए यदि आपका लेख प्रकाशन योग्य हो, तो वह जरूर प्रकाशित होगा। इस तरह आप स्वतंत्र पत्रकारिता मे भी नाम कमा सकते है जैसे स्वतंत्र पत्रकार खुसवंत सिंह, अरूण शौरी आदि।

पत्रकारिता का क्षेत्र एक पेशे के रूप मे अतना व्यापक हो रहा है कि यह खतरे वाला होते हुए भी महिलाओ को आकर्षित कर रहा है। वैसे भारत मे कई संस्था और विश्वविद्यालय हैं जहाँ पत्रकारिता की पढ़ाई होती है। पत्रकारिता को अब कतिपय स्वार्थी और पदलोलुपों ने प्रदूषित करना शुरू कर दिया है। और वे "पैसे" के पीछे अपनी नैतिकता भी बेचने को आतुर रहते हैं। उनकी छवि केवल विवाद खड़ा करने में ही प्रसिद्धि पाती है और वे अपनी हठवादिता के कारण न केवल ग्रामीण पत्रकारिता को कलंकित करते हैं अपितु पत्रकारों के हितों की रक्षा पर कुठाराघात भी करते हैं। ऐसे लोगों से सावधान रहते की जरूरत है।

# कहीं दीप जले कहीं दिल

✍रजनीश कुमार तिवारी

खूबसूरत से बंगले के चारों ओर भीनी–भीनीं खुशबू से आस–पास का सारा इलाका महक रहा है। बंगले में ऊपर से नीचे तक छोटे–छोटे टिमटिमाते बल्ब इस तरह लग रहे हैं मानो आकाश उतर कर धरती पर आ गया हो। कालीन भी कमरे से लेकर बाहर गेट तक ऐसे बिछी है जैसे पहाड़ो से निकली नदियॉ अपना द्वार स्वयं बना लेती हैं। बंगले के बाहर लम्बी कतारों में कारें खड़ी हैं। आज जिलाधिकारी राजेश मिश्रा के घर पर कोई खास कार्यक्रम है। घर के अन्दर बड़े से बरामदे में चारों ओर मखमल बिछा है जिसके चारों ओर सोफे लगे हैं, मेजें बिछी है, लोग बड़ी खुशी से आपस में बातें कर रहे हैं, कुछ लोग शराब के प्यालों से रस ले रहे हैं, डांस चल रहा है, कई जोड़े आपस में बॉहों में बॉहे डाले ऐसे मचल रहे हैं जैसे झील में हंस के जोड़े तैर रहे हैं।

आज जिलाधिकारी राजेश मिश्रा की शादी की इंगेजमेंट है। राजेश अपने सभी मित्रों से अपने होने वाले सास–ससुर का परिचय करा रहे हैं। उनकी होने वाली मंगेतर भी उनके साथ अपना परिचय बखूबी, खुशी से करवा रही है। परन्तु राजेश की सूनी निगाहें, भरपूर खुशी और अपनी मंगेतर को करीब पाकर भी, बार–बार गेट की ओर बड़ी बेसब्री से दौड़ रहीं है।

तभी एक मित्र हॅसी करता है–" यार, पेट में चूहे कूद रहे हैं। बिल्ली की व्यवस्था तो कर दी है पर राह क्यों नहीं मिल रही। अमां, किसका इंतजार कर रहे हो? भाभी तो करीब हैं। कहीं कई मंगेतर से एक साथ तो इंगेज का प्लान नहीं है?"

सभी हॅसते हैं। हॅसी मजाक चल ही रहा था, परन्तु अपनी मॉ का इंतजार बड़ी बेसब्री से कर रहा था। वही तो सब कुछ हैं। बाप का साया सर से उठने के बाद मॉ ही उसकी जान थी पिता को तो उसने देखा तक नहीं था। मॉ ने ही उसे सब कुछ दिया पिता का प्यार मॉ का आशीर्वाद सभी कुछ मॉ की देन थी। पिता की कमी कभी महसूस भी नहीं होने दी।

अभी वह इसी उधेड़ बुन में ही पड़ा था कि घर के नौकर रामू चाचा आकर उससे कहते हैं–"बड़े साहब, मालकिन का फोन आया है।" राजेश तुरंत दौड़कर फोन उठाता है। उधर से मॉ बोलती है–"बेटा, मुझे अभी आने में काफी देर हो जाएगी। तू ऊषा को अंगूठी पहनाकर पार्टी शुरु कर, तब तक मैं आती हूॅ।"

राजेश बहुत प्रयास करता है, जिद्द करता है–"मॉ, बिना आपके आये कुछ नहीं होगा।" पर मॉ के आग्रह को वह कैसे ठुकरा सकता है? बेमन से वह फोन रखता है और स्टेज पर आकर 'ऊषा' के हाथों में अंगूठी पहनाकर सभी के सामने उसे अपनी पत्नी के रुप में परिभाषित करता है। पार्टी शुरु हो चुकी होती है कि एक कार आकर गेट पर रुकती है जिसमें से एक बूढ़ी सी औरत सफेद साड़ी पहने उतरती है और सीधे स्टेज पर आती है। राजेश उस औरत को मॉ कहता है–"मॉ, ये ऊषा के पिताजी, मि0 मनोहर जी है। इनसे मिलिए ........। " मॉ जैसे ही ऊषा के पिता की ओर पलटकर देखती है पानी में आग लग जाती है। उनका सारा बदन ध् ाू–धू कर जल उठता है, लपटें निकलने लगती हैं और सारा आलम जलकर खाक हो जाता है। वह गुस्से में लाल–पीली हो जाती हैं और तुरंत ही राजेश से कहती हैं–

"यह शादी कदापि नहीं हो सकती है। यह तूने क्या किया?" इतना कहकर वो ऊषा की उंगली से अंगूठी तुरंत उतार लेती हैं और मि0 मनोहर को धक्के दिलवाकर बाहर निकलवा देती है। सभी लोग हैरत में पड़े हैं। मॉ उठकर एक कमरें में चली जाती हैं। धीरे–धीरे सभी लोग बिना कुछ खाये–पिये जाने लगते हैं और राजेश पसीने से पूरी तरह लथपथ एक तरफ हारे हुए जुआरी की तरह सर पकड़ कर बैठ जाता है। उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा है। सारा बंगला ऐसा प्रतीत हो रहा है जैसे किसी मजार पे सजावट की गयी

है। तभी वह उठता है, उसकी नजर अंगूठी पर पड़ती है। वह उस अंगूठी को उठाकर सोचने लगता है कि 'जब पहली बार वह ऊषा को अपने घर लेकर डरा–डरा सा आया था कि पता नहीं मॉ कैसे पेश आए? परन्तु मॉ ने अपनी पहली ही नजर में मेरी पंसद पर अपनी मुहर लगा दी थीं, शायद मुझसे भी अधिक पंसद बन गयी थी। वह ऊषा को जल्दी से जल्दी अपने घर की बहू बनाना चाहती थी। दूसरे ही दिन उन्होंने बाजार से अपनी पसन्द की अंगूठी लाकर मुझे दी थी और कहा था–"राजेश, देख यह ऊषा पर कैसी लगेगी?" वो चाहती थीं कि हम दोनों जल्द ही शादी के बन्धन में बॅंध जाएं। मॉ खुद कहती थीं– "कहीं, हम दोनों के प्यार पर किसी की नजर न लग जाए"। अतः उन्होंने ही जिद्द करके शादी की इंगेजमेंट की तारिख तय की, पर आज मॉ को क्या हो गया? 22 वर्ष आज उसने पहली बार मॉ के चेहरे पर गुस्सा देखा था।

मैं ऊषा को दिलोजान से चाहता हूँ, उसके बिना नहीं रह सकता। ऊषा, मुझे अपनी जान से भी ज्यादा चाहती है। यह मॉ को भी मालुम है कि वह मेरे बिना नही रह सकती है। ऊषा ने गिड़गिड़ा कर मॉ से मेरी भीख मॉगी, ऊषा अपने पिता की इकलौती सन्तान है, उसके कुछ भी कर सकते थे, परन्तु वह उसकी खुशी चाहते थे। वह भी गिड़गिड़ाते रहे, अपना सर मेरी मॉ के कदमों पर रख दिया पर देवी समान मेरी मॉ को पता नहीं क्या हो गया कि उन्होनें धक्के दिलवाकर उन्हें बाहर करवा दिया। ऊषा के पिता को देखकर उन पर जैसे काली देवी सवार हो गयी थीं। वही मॉ जो ऊषा को अपने ऑचल में बिठा कर बहु बनाना चाहती थीं, पल भर देर करना नहीं चाहती थीं और आज एक झटके में ऊषा के तप, मेरे प्यार को जलाकर राख कर दिया। आखिर क्यों? मैं उठकर, अपने को संभाल कर मॉ के पास जाना ही उचित समझा। मॉ ही तो मेरे लिए सबकुछ हैं। वह खुद जलती रहीं परन्तु मुझे हमेशा अच्छा ही पढ़ाया, लिखाया, अच्छी शोहरत दी, मुझे आज इस मुकाम पर पहुॅचाया कि मैं मॉ के तप–त्याग को उनके सुख में बदल सकूॅं। 21 वर्ष बाद इस घर में दीप जला था पर वक्त के थपेड़ों ने उन्हें बुझा दिया।

अपने दर्द को छुपाकर वह मॉ के कमरे में गया। वह रो रही है। मुझे देखते ही वह दौड़कर मुझे उसी प्रकार लिपटा लेती है और पुनः उसी प्रकार रोने लगती है जैसे कोई मॉ अपने छोटे से बच्चे को गुस्से में मार तो देती है पर बाद में वह पछता कर उसे पुचकारती है, प्यार करती है। मॉ भी रो–रो कर कहने लगी–"बेटा, पहले मेरी कहानी सुनो फिर स्वयं फैसला करना। मैं तुम्हारी खुशी को गले लगा लूॅंगी।"

मॉ बताती है–"करीब, 25 वर्ष पहले मै बी.ए. प्रथम वर्ष की छात्रा थी। एक दिन मैं कॉलेज से घर आ रही थी कि बस–स्टॉफ पर खड़े–खड़े बहुत शाम हो गयी थी पर बस नहीं आयी। घर काफी दूर था तो मैं लाचार होकर पैदल ही चली जा रही थी तभी पीछे से कोई नौजवान स्कूटर से पास आकर कहता है–'' चलिए, मैं आपको घर छोड़ दूॅं। शाम काफी हो चुकी हैं और आपका अकेले जाना ठीक नहीं।''

मैनें कई बार उसके प्रस्ताव को अस्वीकार्य किया परन्तु रात्रि काफी हो जाने के भयवश मुझे उसके प्रस्ताव को स्वीकृति देनी पड़ी। वह एक नेक लड़का लगता था। रास्ते भर मैं एक शब्द भी नहीं बोली। किसी अपरिचित लड़के के साथ पहली बार वो भी रात्रि में, अकेले घर जा रही थी। डर से मेरा बुरा हॉल था। वह घर तक छोड़कर जाने लगा, लेकिन डरवश उसको धन्यबाद के सिवा कुछ न कह सकी। वह छोड़कर चला गया।

मेरे बापू जी बहुत ही सीधे–साधे और बहुत ही इज्जतदार लोगों में से थे। उनका परिवार और समाज में लोग बहुत ही सम्मान करते थे। अतः उस नवयुवक को अन्दर आने के लिए नहीं कह पायी कि पता नहीं वो क्या कहेंगे?

अब वह रोज ही कालेज से लौटते वक्त मुझे मिल जाता था। उसके आग्रह, उसकी नेकदिली, सीधेपन पर कभी भी इन्कार न कर सकती। पूरी राह हम दोनों चुप रहते। वह मुझे घर छोड़कर चला जाता।

धीरे–धीरे महीने, वर्ष गये और हम दोनों एक–दूसरे को मन ही मन चाहने लगे थे। वह मुझे बहुत चाहता था, मेरे लिए जान तक न्योछावर कर सकता था और मैं भी उसके लिए पूर्ण समर्पित थी। धीरे–धीरे बात समाज में, गली–गली में होने लगी और एक दिन यह बात मेरे पिताजी को पता चली, जिससे उन्हें बहुत ही सद्मा पहुॅचा। उन्होंने मुझे बहुत समझाया परन्तु मैं उसके बिना नहीं रह सकती थी और न ही वो मेरे बिना रह सकता था। मुझे कुछ भी समझ नहीं आ रहा था। मैं उसको पाकर सब खो सकने को तैयार थी। बात बिगड़ती देख मैनें कई बार शादी का आग्रह किया परन्तु वह टालता रहा। पिताजी का स्वास्थ्य दिन पर दिन इसी गम में गिरता जा रहा था। उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा सड़क पर आ चुकी थी। वह प्रायः घर पर ही रहने लगे, घर की परिस्थितियॉ बिगड़ने लगीं।

मैंने बहुत बार प्रस्ताव रक्खा, पर वह टालता रहा।

एक दिन पिताजी ने उसे किसी लड़की के साथ घूमते हुए देखा। वह मुझसे बताने लगे, सब कुछ खोकर भी वह मुझे समझाते रहे। वो मेरा विवाह कहीं और करना चाहते थे, पर मैं उसके सिवा किसी और के बारे में सोच भी नहीं सकती थी। और एक दिन जब मैंने उसे किसी अन्य लड़की के साथ देखा तो उससे शादी की जिद्द की। पर उसने बताया कि "उसकी शादी एक बड़े घर की लड़की के साथ तय हो गयी है।"

मुझे काटो तो खून हीं नहीं। पैर के नीचे से धरती खिसक गयी, मेरा बुरा हाल हो गया। यह सब जानकर भी, सिर्फ मेरी खुशी के लिए उसके पास गये, उसे बहुत समझाये और उसके सामने बहुत गिड़गिड़ाये परन्तु उसने एक न सुनी और किसी बड़े घर की लड़की से उसने शादी कर ली। पिताजी लौटकर घर तक भी नहीं आ सके। वह इस सदमे को बर्दाश्त नहीं कर सके और उन्हें हार्ट–अटैक हो गया और वह साथ छोड़कर चले गये। मेरा मन भी इस जीवन से भर चुका था, मैं जीना नहीं चाहती थी। मैं तो सब कुछ लुटा कर भी खो ही रही थी, पिताजी की मृत्यु की दोषी भी मैं ही थी। मैं भी आत्महत्या करना चाहती थी परन्तु मॉ की बूढ़ी ऑखों में तैरते आंसुओ ने मुझे जिन्दा रहने के लिए विवश किया। किसी तरह मॉ ने मेरा विवाह कहीं अन्य जगह तय कर दिया। अब मैं मॉ को और दुःख नहीं देना चाहती थी अतः विवाह कर लिया।

धीरे–धीरे सभी कुछ सामान्य होने लगा। जख्म में टीस उभरती रही पर सुख दवा बन जख्म भरता रहा। जीवन खुशहाल बनने लगा, घर में दीप जलने लगे कि एक दिन तेरा जन्म हुआ और घर में खुशियॉ छा गयी। उन्हीं बीच एक दिन तेरे पिताजी के कुछ दोस्त घर पर आने वाले थे और हम लोग बहुत खुश थे कि आज वो सब आ रहे हैं। अचानक दरवाजे पर दस्तख़त हुई और मैं खुशी से दरवाजा खोलने गयी कि सामने उसी

नवयुवक, उसी प्रेमी को देखकर मेरे जख़्म पुनः उभर पड़े। जिन्दगी डगमगाने लगी लेकिन खुद को सम्भाल कर बेमन से मैंने उनका स्वागत किया परन्तु जाते वक्त वह इस घर के दीप को बुझा गया। उसने तेरे पिताजी को अपनी और मेरी प्रेम कहानी बता दी। तेरे पिताजी ने गुस्सें में आकर आत्महत्या कर ली और फिर दर्दो से वास्ता शुरु हो गया। सारी खुशियॉ सिमटने लगीं। मॉ को यह बर्दाश्त नहीं हुआ और वह भी इस गम की आंधी में हमे छोड़कर हमेशा के लिए चली गयी मै एकदम टूट गयी। जख़्म जीने नहीं देते और तेरा जीवन मरने नहीं देता। बेटा, किसी तरह तुझे पढ़ाया, बड़ा किया तेरी खुशियों को गले लगाने ही जा रही थी कि ऊषा के पिता से सामना हो गया। ये वही मेरा प्रेमी मि० मनोहर है जिसके घर मैं सदैव दीप जलते रहे और हम लोगों को यहॉ दिल जलते रहे। इसने तेरे बाबा, पापा, नानी के जीवन का अंत किया, मेरा ये हाल किया। बेटा, अब तू ही फैसला कर। तू जो भी कहेगा, वही होगा"

अभी तक मॉ बहुत ही रो चुकी थी। वह राजेश से लिपटी रोये ही जा रही थी, राजेश का बहुत बुरा हाल था, रो–रो कर ऑखे लाल हो चुकी थीं। तभी दरवाजे पर दस्तख़्त होती है और पेपर वाला समाचार पत्र देकर चला जाता है। अचानक राजेश की नजर पेपर के उस समाचार पर पड़ती है जिसे पढ़ वह चौक उठता है। राजेश मॉ से कहता है–"मॉ, ये पढ़ो। देखो, क्या लिखा है?" मॉ भी समाचार पत्र पढ़ने लगती है। जिसमें लिखा होता है कि किसी ऊषा नाम की लड़की ने आत्महत्या कर ली है उसने सुसाइट–लेटर में अपनी आत्महत्या का कारण अपने पिता हो लिखा है।

दूसरे दिन जिला जन ने मि० मनोहर को उम्र कैद की सजा सुनायी। वह जेल जा ही रहा होता है कि रास्ते में एक्सीडेन्ट हो जाता है, पर इस स्थिति में भी उम्र कैद यथा स्थिति पर हैं।

राजेश मॉ से कहता है–"मॉ, ईश्वर ने अपना फैसला सुना दिया। अब यहॉ केवल दीप जलेंगें।"

मॉ कहती है– "बेटा, कुछ भी हो पर अपने घर में आज भी दीप और दिल दोनों ही जल रहे हैं।

राजेश मॉ की ऑखों से बहतु हुए आंसू पोछ देता है।

## जुदाई

स्वरांजली

उन ऑखो की क्या बात कहूँ
उनमें थी इतनी विरानी
हृदय में कोई घाव था शायद
तभी था इतना पानी,

सजल हो गयी हमे देखकर
बरसा इतना पानी
भींग गये उर आंगन सबके
तब सबने ये जानी।।

पर न जाने वो निर्मोही
क्यों है उनको छोड़ चला
वो जीवन की सारी कसमें
पलभर में ही तोड़ चला।

अब तन्हा हूँ तन्हाई है
संग बस केवल परछाई है
इस कल्प वृक्ष की सब शाखा
वक्त पड़े मुरझायी हैं।।

क्या बात कहूँ उस हृदय की
बस पीड़ा थी, बस पीड़ा है।
जीवन की संध्या बेला में
क्यों वो आदमी अकेला हैं

## ग़ज़ल

*कमल स्नेहिल*

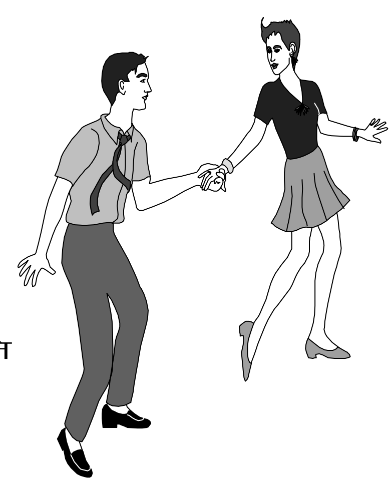

दोस्ती की हकीकत जो मैंने सुनी
दुश्मनी अब मुझे रास आने लगी
जिस जिन्दगी पे मुझको कभी नाज था
वो जिन्दगी भी अब आंसू बहाने लगी
चाहा जिस कली को फूल बनके खिले
वो कली भी देखो कैसी मुरझाने लगी
जिस शख्स को भूलने की ख़ता की थी मैंने
उसी बेवफ़ा की याद अब सताने लगी
मौत मिल जाए एक पल में तो है सस्ती
सारी दुनियां 'कमल' को यही समझाने लगी।

## पाकिस्तानी नेताओं की यात्राएं:

1984–जनरल जिया उल हक ने इंदिरागॉधी की अंतिम यात्रा में शिरकत की।

1985–राजीव गॉधी नये–नये प्रधानमंत्री बने थे। उस वक्त पाकिस्तानी राष्ट्रपति जनरल जिया उल हक ने भारत की यात्रा की। इसी समय काश्मीर में प्रायोजित आतंकवाद का दौर प्रारम्भ हुआ।

1986– मोहम्मद खान जुनेजो ने सार्क सम्मेलन में भाग लेने के लिए नई दिल्ली की यात्रा की।

1987–जनरल जिया क्रिकेट को कूटनीति के लिए इस्तेमाल कर रहे थे। उन्होंने भारत की यात्रा की।

1991–पाकिस्तान के प्रधानमंत्री नवाज शरीफ भारत के पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गॉधी की अंतिम क्रिया में भाग लेने आए।

1995–फारुक लेघारी सार्क सम्मेलन में हिस्सा लेने आए।

2001– स्वयभू राष्ट्रपति जनरल परवेज मुर्शरफ भारत की यात्रा पर आए।

# कुछ खास बातें

1. सुबह–शाम एक–एक लौंग का सेवन नियमित रुप से करें। इससे सांसो की दुर्गंध दूर करने में मदद मिलती है।

2. यदि आपको कब्ज और गैस की शिकायत हो, तो पुदीने के रस को शहद के साथ मिलाकर पिएं। निश्चित रुप से लाभ होगा।

3. जूते पर से यदि तारकोल और ग्रीस के दाग हटाने हो, तो उन्हें नेल पॉलिश रिमूवर से छुड़ाए। दाग आसानी से साफ हो जाएंगे।

4. यदि आपका तौलिया मुलायम न हो या ज्यादा पानी नहीं सोखता हो, तो एक बाल्टी पानी में एक मुट्ठी नमक मिला दें और उस पानी में तौलिए को एक दिन के लिए डुबोकर छोड़ दें। इसके बाद उसे धोकर सुखा लें। तौलिया मुलायम और अधिक पानी सोखने वाला हो जाएगा।

5. यदि कारपेट पर च्यूइंगगम चिपक गया हो, तो उस पर बर्फ का टुकड़ा घिसें। च्यूइंगगम अलग हो जाएगा।

6. अलार्म घड़ी की आवाज यदि और तेज निकालनी हो, तो घड़ी को किसी स्टील की प्लेट में रख दें। घड़ी की प्रतिध्वनि आवाज निकलेगी।

7. गुलाब के पौधे को यदि आपने गमले में लगा रखा है, तो गमले में एक चम्मच कॉफी छिड़क दें। इससे गुलाब के और सुंदर फूल खिलेंगें।

8. यदि कप पर से चाय और कॉफी के धब्बे हटानें हों तो उन धब्बों को नमीयुक्त नमक से रगड़ दें। धब्बे छूट जाएगे।

9.नीम की पत्तियों को सुखाकर किताबोंऔर कागजों के बीच रखने से कीड़े–मकोड़े से उनका बचाव होता है।

10. यदि कपड़े पर आइसक्रीम के दाग–धब्बे लग गए हों, तो पहले कपड़े को ठंडे पानी से धो लें। इसके बाद उन दाग–धब्बों पर बोरेक्स पाउडर लगाकर उसे पुनः धो लें। धब्बे गायब हो जाएगे।

11. चायपत्ती का धुप में सुखाकर रख लें। जबभी आपके घर में मच्छर लगें। उन्हें सुलगा दें मच्छर भाग जाएंगे।

12. चावल को कीड़े से बचाने के लिए चावल के डब्बे में नीम की पत्ति डाल दें।


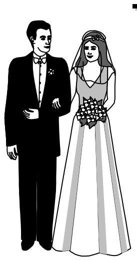

**तान्या ज्वेलर्स**

सोने एवं चॉदी के आभूषणों के
विक्रेता एवं निर्माता

प्रो0: हीरालाल

**सम्पर्क करें:** 2/2, लूकरगंज, जी.टी. रोड, हीरालाल मार्केट, इलाहाबाद

प्रवेशांक निकलने पर हार्दिक शुभकामनाओं सहित स्थापित : 1996

विगत पांच वर्षो से आपकी सेवा में सेवारत

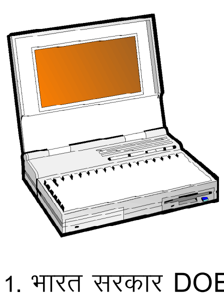

**फ्यूचर कम्प्यूटर लर्निग सेन्टर**

277/486, जेल रोड, चकरघुनाथ, नैनी, इलाहाबाद
( उ0प्र0 सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त)

कोर्सेस :

1. भारत सरकार DOEACC से मान्यता प्राप्त ओ लेवल कोर्सेस
2. C++, Oracle, Internet, Visual Basic, Java, HTML, DTP, Progaramming, Account.
3. IGNOU और राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा संचालित BCA, DCO, CIC, PGDCA MCA कार्सो की तैयारी व संचालन
4. यू0 पी0 बोर्ड, सीबीएसई, आईसीएसई बोर्ड द्वारा संचालित कक्षा 9 से 12 तक कोर्सो की कोचिंग की व्यवस्था
5. विद्यालयों/महाविद्यालयों में कम्प्यूटर संचालन की व्यवस्था
6. जॉब वर्क 7. कलर प्रिटींग 8.स्क्रीन प्रिटींग 9. प्रोजेक्ट वर्क

दुर्गा पुजा एवं दशहरा पर्व को शांन्ति पूर्वक मनाने के लिए इलाहाबाद के नगर वासियों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

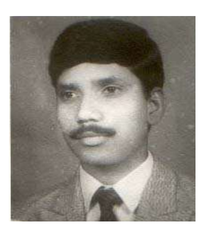

**अवधेश कुमार**
**सभासद**
**सदस्य**–कार्यकारिणी समिति
नगर निगम, इलाहाबाद

**महानगर अध्यक्ष**
बहुजन समाज पार्टी, इलाहाबाद

**ब्रजेश कुमार सोनकर**
नेता,
बहुजन समाज पार्टी, शहर पश्चिमी, इलाहाबाद

# मॉ भारती की प्यास

मां क्या तुम प्यासी हो?
भूख से क्षुधा पीड़ित है तेरी,
अरे मॉ आजाद देश है
म्लेक्ष शेष है।
जकड़ी जंजीर गुलामी
की टूट गई
बेड़िया बंधे पावों
झन झना कर छूट गई।
लहराते खेतों का
अंचल तेरा अपना नहीं
लगती नजर पराई ऑख
देख जिनका तूने
कभी सपना नहीं
हल्दी, तुलसी, नीम
का आयुर्योग
लगाये विदेशी जिनका
अमृत भोग
तभी मॉ आज दामन
में धूल भरे फिरती हो,
लड़खड़ाती गिर–गिर
पड़ती हो,
अपने ही बेटों को
बटते देख बौराती हो,
जाति–भेद–भाव–ज़हन
में भरता देख,
घबराती हो।
शायद इसी से तुम अतृप्त,
घोर प्यासी हो?
तभी स्वतंत्र सत्ता में
नौनिहालों को भुनवाती हो
उनके लाल लहू को
आस्वाद करती हो।
चप–चप गर्म तरल
रक्त पीती हो।
मॉ काली बन जीती हो
लाश नैराश्य महामारी
आतंकी ग्रर्म ग्रसी भारी
गोला बारी
भयानक जान लेवा
बीमारी
मैं अट्टहासी हंसी
भरती हो।
मॉ चंडी मत बन।
'पुत्रों कुपुत्रों जायते, क्वपित
माता कुमाता न भवति'
मां राज सत्ता के लोभी
लाडलों को बचा
उन्हें अनाचार से हटा।
मानवता का तरल
पाथयेत भी तभी करेगी
आहलाद का भोजन
सर्वांङ्ग में भरेगी।
सच्चे संस्कार का सृजन
कर।
परमार्थ जन का जनन कर
जो जल रहे अनारक्षित
हो रहे
उपेक्षित, निशाषित
हो रहे उन्हें बचा।
मां मुझे पता है
स्नेह गंगा पतित पावनी
से परिहाप्ट


लेखक एक परिचय

डा0 कुसुम लता मिश्रा (सरल)

एम0ए0डी0फिल0(हिन्दी साहित्य)
इलाहाबाद विश्वविद्यालय
चिकित्सक एक्यूप्रेशर एवं एक्यूपंक्चर विधा, इलाहाबाद
निवास– 132 के0बी0, आई0टी0आई0 काम्पलेक्स,
आई0टी0 आई0, नैनी, इलाहाबाद
फोन0 ☎686238

होगी तेरी प्यास,
उसी की करनी हमें
तलाश,
नहीं तो सम्पूर्ण धरापर
गिरेगी, हरे वृक्ष उड़ते,
वन पाखियों गरजते सिंहों,
जवान पुत्रों की ताज़ी लाश,
सध वेवाओं बहनों
ममताओं की जकती धधेली
आस।
हो जायेगा अमृत पयस्विनी
स्वर्ण पक्षी भारत का
सत्यानाश।


समय पर

*विश्व स्नेह समाज*

पत्रिका आपके दरवाजे पर

इस सुविधा का लाभ उठाइये

अपनी चहेती पत्रिका **"विश्व स्नेह समाज"** घर बैठे नियमित पाइये।

न खरीदने जाने की जरुरत न अंक खत्म होने का डर।

विश्व स्नेह समाज समय से पहुँच जाए आपके घर! बस कूपन को भरकर शुल्क सहित हमें भेज दीजिए। देर मत कीजिए।

कूपन

नाम : ........................................................
डाक का पता– ........................................
.......................................................................

भारत में
मूल्य वार्षिक (साधारण डाक से) 50/.
मूल्य वार्षिक (रजि0डाक) 150/–
विदेशों में (नेपाल व भूटान को छोड़कर)
साधारण डाक से 100/–रुपये
रजि0 डाक से 250/– रुपये
भुगतान का माध्यम
चेक/मनीआर्डर/डिमांड्ड्राफ्ट
इलाहाबाद से बाहर के चेकों के लिए 20/रुपये
अतिरिक्त राशि देय होगी।
कृपया चेक/ड्राफ्ट/मनीआर्डर निम्नलिखित पते पर भेजें

विश्व स्नेह समाज
एफ.सी.एल.सी
277/486, जेल रोड, चकरघुनाथ, नैनी,
इलाहाबाद–8

☎617725
**फरहान अजमल**
20ए, भुसौली टोला, खुल्दाबाद, इलाहाबाद
रेडीमेड शर्ट एण्ड जीन्स ट्राउजर के लिए सम्पर्क करें।
**दिवाली ऑफर**
1500/रुपये में कोट पैन्ट शर्ट

# लहबाबा श्रीनाथ की नगरी - सिरसा

मथुरा प्रसाद सिंह

भारत भूमि के आर्यावर्त के भरत खन्ड की पवित्रतम् मातृ गंगा के पावन दक्षिणावर्त तट पर अवस्थित व्यवसायिक नगरी सिरसा का प्रयाग जनपद के अन्तर्गत विशिष्ट महत्व है। हमारे अध्ययन काल से शिक्षा विभाग सेवारत काल तक इस नगरी से निकटतम् सम्पर्क रहा है। धार्मिक साँस्कृतिक, शैक्षिक, और व्यापारिक दृष्टि से यह नगरी अपनी अलग पहचान रखती है।

सन् 1945 ई0 में मैं मिडिल स्कूल में यहाँ शिक्षा प्राप्त करने आया। सन् 1952 ई0 तक यहाँ शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् सन् 1949 ई0 से 1961 ई0 तक प्राध्यापक के पद पर कार्यरत कर 1962 ई0 से 1991 ई0 तक प्रधानाचार्य के पद श्री रामप्रताप इण्टर कालेज सिरसा में कार्यरत रहते हुए अवकाश प्राप्त किया। समय के इस अन्तराल में यहाँ शिक्षा के क्षेत्र में उत्तरोत्तर प्रगति होती रही। बीच–बीच में व्यापारिक उतार–चढ़ाव जरूर आया। यहाँ के अधिकांश व्यापारी अन्यत्र व्यवसाय हेतु पलायन कर रहे है। आशुतोष भगवान शिव का पाषाण निर्मित मंदिर यहाँ श्रीनाथ बाबा के नाम से सुविख्यात है। शिवलिंग के सम्बन्ध में सुना गया है कि सिरसा के तत्कालीन धनाढ्य धुहू साहु को स्वप्न में निर्देश हुआ था कि खुदाई करो और शिवलिंग मिलने पर उसी स्थान पर मंदिर बनवाओ।

धुरहू साहु के खुदाई करने पर जो शिवलिंग मिला था वही आज तक मंदिन में प्रतिष्ठापित है। यहाँ भक्त जन गंगा स्नानोपरान्त पूजा अर्चना वन्दना और नमन किया करते हैं। सिरसा के ही तगर सेठ स्व0 माता प्रसाद वैश्य ने श्री रामनाम संकीर्तन का प्रारम्भ विगत (कई दशक) वर्षो पूर्व कराया था आज भी उनके पुत्र श्री काशी नाथ वैश्य रामनाम संकीर्तन कराया करते हैं और व्ययभार स्वंय वहन करते आ रहे हैं।

धुरहू साहु द्वारा बनवाई गई दो सुदृढ़ इमारते यहाँ आज भी है। यहीं राजा मान्डा का बनवाया एक भवन है। जहाँ कभी मान्डा नरेश सपरिवार गंगा स्नान करने आने पर निवास करते थे। पावन गंगा तट पर पूर्व दिशा में इतवारी देवी का प्राचीन मंदिर पाषाण निर्मित जो अब भग्न रूप में है यहाँ पत्थरों में सुगंन्ध का अनुभव होता है। ऐसा लगता है कि किसी सिद्ध महर्षि का यह आश्रम रहा होगा। जिनका चिर कालीन प्रभाव सुगन्ध के रूप में पाषाणों तक में वर्तमान है। तपस्वियों के रहने का प्रमाण यहाँ पाई जाने वाली गुफा से स्पष्ट हो जाता है।

सिरसा नगरी के उत्तरी सीमा पर प्रवाहित पावन भागीरथी में तमसा नही संगम कर रही है। यह वही तमसा नही है।तट पर गंगा के निकट ही आदि कवि ब्रह्मर्षि बाल्मीकि ने जलक्रीड़ा रत क्रौच–क्रौची पक्षी का दारूण क्रन्दन श्रवण करं श्राप दिया था।

'मा निषाद प्रतिष्ठां त्वं गमः शास्वती समाः।'
यत्क्रौंच मिथुनादेकं मवयी काम मोहितम्।।

वह स्थान वर्तमान् ग्राम पर्णाश (पनासा) जहाँ का बनकटा मुहल्ला प्राचीन काल में जंगलो को होना प्रमाणित करता है। तथा निषादों की बस्ती चकवा–चकवी पक्षी का पाया जाना उन तपोनिष्ठ ब्रह्मर्षि बाल्मीकि के आश्रम तथा आदि काव्य के प्रथम प्रेरक स्थल होने की पुकार करता है वह सिरसा के ठीक उत्तरी सीमा पर ही है। इस नगरी का जल मार्ग से नावो द्वारा व्यापार होता था। तब राजपथ और रेलमार्ग का विस्तार सीतिम था। सिरसा और उपरौड़ा ग्राम के नाविकों की विशाल नावें सूदूर कोलकता और कानपुर से आयात निर्यात की साधन थी। सिरसा में दाल की व्यापारिक मन्डी थी। चौरासी क्षेत्र की उर्वरभूमि का अन्न यहाँ विक्रय होता था वैश्य समाज और अग्रवाल समाज में यहाँ की व्यापारिक गति को दिशा देने में अहम् भूमिका निभाया है।

चौरसी क्षेत्र ही नहीं वरंन प्रयाग जनपद और मिर्जापुर तथा सूदूर पूर्वी जनपदों के छात्र यहाँ शिक्षा प्राप्त करने लाला राम लाल अग्रवाल कालेज जो कला, विज्ञान, वाणिज्य और कृर्षि वर्गों में ग्रामीण क्षेत्रों को एक मात्र विद्यालय बना था सिरसा की ख्याति का प्रमुख कारण है।

सिरसा में ब्रिटिश शासन काल में मिडिल स्कूल है। लेकिन राजकीय इण्टर कालेज नहीं। शिक्षा की बढ़ती हुई आवश्यकता को देखकर त्यागी मनीषी स्व. राम प्रताप जी गुप्त ने इण्टर मीडिएट कालेज की स्थापना ही जहाँ की दूरदर्शी प्रबन्ध समिति शिक्षक और शिक्षार्थियों ने अटूट लगन और परिश्रम के बल पर सर्वोत्तम परीक्षा फल देकर कीर्तिमान स्थापित करके आप भी अपनी गरिमा को सुरक्षित रखा है।

नारी शिक्षा की अधिकतम् आवश्यकता को देखते हुए श्रीराम प्रताप इण्टर कालेज सिरसा की प्रबन्ध समिति ने श्री राम प्रताप महिला डिग्री कालेज का भवन निर्माण कराया है जहाँ शीघ्र शिक्षण कार्य प्रारम्भ होगा।

जिला पंचायत इलाहाबाद द्वारा संचालित कन्या इण्टर कालेज का योगदान नारी शिक्षा में महत्वपूर्ण है।

साँस्कृतिक विचार प्रवाह में लोक भाषा के माध्यम से कजली ध्वनि में गीतों की रचना करने वाले शायर 'स्व0 रामलाल ' वैश्य यहाँ के निवासी थे। जिनके शार्गिदों ने कई दशको तक इनकी रचनाओं का गान मिर्जापुर व इलाहाबाद के साँस्कृतिक अवसरों पर किया करते रहे।

राम लीला और भरत मिलाप का आयोजन रंग–बिरंगी विद्युत छटा में सिरसा में आज भी सदैव की भाँति किया जाता है।

भारतीय स्वाधीनता संग्राम के पावन यज्ञ में यहाँ के साहसी देशभक्तों में स्व0 आदित्य प्रसाद तिवारी व गायत्री प्रसाद तिवारी, स्व0 वासुदेव सिंह, स्व0 रामस्वरूप सिंह, मुशी राम स्वरूप यादव, स्व0 रामनाथ सिंह, स्व0 विश्वनाथ यादव, स्व0 महेश गुप्त, स्व0 चन्द्रशेखर व स्व0 पंचम लाल निषाद रहे। सिरसा नगर पंचायत के वर्तमान चेयरमैन श्री भानु प्रकाश अग्रवाल ने नगर में पेयजल विधुत व्यवस्था, यातायात का समुचित प्रबन्धन करके नागरिकों की आधारभूत आवश्यकता की पूर्ति करने में सराहनीय कार्य किया है।


प्रो0 राजेश निर्मल ☎ 617490
किसी भी शुभ अवसर पर
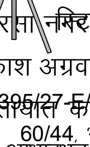
निर्मल फोटोग्राफर
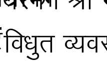
स्टिल फोटो एवं वीडियोग्राफी
के लिए सम्पर्क करें
395/27-E/20, चकनिरातुल, चौफटका, इलाहाबाद
60/44, भुसौली टोला, खुल्दाबाद, इलाहाबाद

# समाज के लिये उपयोगी बनें

**शम्भू नाथ मिश्रा, यु0नि0यो0**

महात्मा एपिक्टेटस कहा करते थे किक भेड़े जो घास–पात खाती है, उसका ऊन बनाती है और इंसान जब अन्न खाकर कुछ भी पैदा न करें, तो वह पशुओं से भी बदतर है। संसार में जो प्राणी अपने आप को जीवित रहते हुए अधिक उपयोगी सिद्ध करते है, उनकी नस्ल बनी रहती है और दूसरे काट डाले जाते है। बकरे को ही लीजिए, बकरा न तो दूध देने के ही काम आता है और न बोझा ढ़ोने के ही इसलिए वह काट डाला जाता है। अतएव यदि हम चाहते है कि हम संसार में भली–भॉति बनें रहे, तो हमें चाहिए कि हम अपने आप को दूसरों के लिए उपयोगी सावित करें और अपनी उपयोगिता तथा सेवा–शक्ति को दिन–प्रतिदिन बढ़ाते रहें।

यदि हमारा जीवन उपयोगी है और जनता भी हमारी उपयोगिता को स्वीकार करती है, तो हमें अपनी जीवन यात्राा के लिए संबल कहीं भी मिल जाएगा। उपयोगी व्यक्ति जहॉ कहीं भी जाता है, वहीं उसे उसकी जीवन यात्राा के मार्ग–ब्यय मिला जाता है। उसके लिए उसे चिंता करने की जरुरत नहीं। महात्मा इमर्सन ने कहा है कि "उपयोगी मनुष्य की संसार को इतनी जरुरत है कि यदि वह जंगल में भी डेरा डालेगा, तो लोग जंगल तक एक पक्का रास्ता तैयार कर लेंगें।

हम मानतें है कि बहुधा संसार का हित करने वाले लोग सूली पर चढ़ाये जाते हैं और मक्कारों की आवभगत होती है। पहले जमाने में सुकरात, ईसा, मोहम्मद और दयानन्द जैसे समाज–सुधारकों के साथ लोगों ने जैसा व्यवहार किया उन्हें लोग जानते है, पर आज भी हम देखते है कि जिनका सिद्धात है "रोटी खाओ शक्कर से, दुनिया ठगो मक्कर से", वे ही लोग संसार में ऐश आराम करते है और दूसरे सत्य प्रिय लोगों को खड़े होने के लिए भी जगह नहीं मिलती। लूटने वाले लोग गुलछर्रे उड़ाते है। जी तोड़कर रात–दिन परिश्रम करने वाले लोगों के एक निवाला भी नसीब नहीं होता। लोग कहेंगे कि अब अपना–अपना भाग्य है। या ईश्वर की आड़ में समाज का पाप है। ईमानदार व्यवसायी की अपेक्षा नशीली वस्तुएॅ बेचने वाला इसिलिए अधिक धनधान्य सम्पन्न है कि समाज का नैतिक धरातल अत्यन्त नीचा है, वह नादान है और हित प्रद वस्तुओं की अपेक्षा अपना नास करने वाली वस्तुओं का अधिक मूल्य चुकाता है। समाज अपने अविवेक के कारण जिन दुषित वस्तुओं में सुख मानता है, उसकी ये लोग पूर्ति करते है, इसलिए ये लोग ऐश लूटते है। समाज को यदि व्याभिचार–सुख और नशीली वस्तुओं की आवश्यकता न रह जाए, तो आप को सती स्त्रिायॅा कंगाल और ईमानदार व्यवसायी कभी गरीब न दिखाई देगें। उपयोगी व्यक्ति सुखी होते है, यह सिद्धात तो अक्षरशः सबके सम्बन्ध में भी सत्य उतरता है। प्रश्न केवल यह रह जाता है कि समाज द्वारा उपयोगिता का अर्थ क्या लगाया जाता है? समाज जिसे अधिक उपयोगी समझत है, उसे अधिक धन–धान्य सम्पन्न कर देता है।

आज हमारी निगाहों में चेतन की अपेक्षा जड़ का अधिक मूल्य हैं। हम आध्यात्मिक सुख की अपेक्षा भौतिक सुख को अधिक महत्व देते है और भौतिक ऐश्वर्य भोगने वाले का आध्यात्म्कि–पुरुषार्थ करने वालों की अपेक्षा अधिक सम्मान करते है। अतएव यही कारण है कि भौतिक सुख सामग्रियों को उत्पन्न करने वाले लोगों की आर्थिक सामाजिक एवं राजनैतिक स्थिति अध्यातम पुरुषार्थियों की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ होती हैं। अतएव यदि किसी आत्मपुरुषार्थी का किसी समृद्धिशाली की अपेक्षाकम सम्मान होता है तो भूल समाज की है। इससे आत्मपुरुषार्थी की उपयोगिता कम नहीं होती। अतएव केवल उपयोगी बनने से ही काम न चलेगा। आपको यह भी देखना होगा कि समाज का नैतिक धरातल ऊॅचा उठता है और आपकी उपयोगिता समाज द्वारा स्वीकृति होती है। आप समाज को जो कुछ देते है, समाज में उसे ग्रहण करने की योग्यता होने पर ही आप समाज द्वारा सम्मानित हो सकते हैं। इसलिए समाज का नैतिक धरातल उठाने का प्रयत्न करना भी आवश्यक है।

यदि समाज का नैतिक धरातल ऊॅचा है, तो उपयोगी बनना ही सच्चा धनी होना है। उपयोगिता एक ऐसी हुन्डी है जिसे सर्वत्रा भुनाया जा सकता है। प्राचीन काल में ब्राहमण इतना उपयोगी था कि उसके राजदरबार में हाजिर होते ही राजा खड़ा होकर उसका अभिवादन करता था। ब्राहमण नंगे पैर यात्राा करता था, पर क्या हम कह सकते है कि उसे धन–धान्य की कमी थी? राजा से धन–धान्य स्वीकार करने की याचना करता था, पर वह उसे स्वीकार न था। वह साक्षात भू–देव था। जहॉ वह जाता वहीं उसको लक्ष्मी मिल सकती थी, इसलिए वह उसे लिए–लिए फिरने की मूर्खता क्यों करता? इस तरह हम देखते है कि अच्छे समाज में हमारी सेवा–शक्ति व हमारी उपयोगिता ही हमारा सच्चा धन है। इस समय हम अपने सेवाओं के मूल्य की चिन्ता न कर केवल उपयोगिता के सहारे ही कार्य करते रहें। दुर्भाग्य से आज हम सच्चे अर्थ में धनी होना भूल गये है। हम आज अपने धन को अने पुरुषार्थ और योग्यता का मापदंड नहीं कह सकते। आज हम अपनी उपयोगिता के कारण धनी बल्कि लोगों को कष्ट देने के कारण अथवा खोटा माल दे सकने के कारण धनी बनते है। जिस अफसर से लोगों का अधिक हानि हो सकती है, वह धनी बन जाता है। व्यापारी भी जनता को कष्ट देकर ही धनी बनते है। एक समृद्ध व्यापारी घी में आलू या वनस्पति घी मिलाकर लाखों बना लेता है। इस तरह उपयोगी बनने के स्थान में जनता का अभिशाप बन कर आज लोग धनी बनते हे। ईश्वर वह दिन शीघ्र लाए, जब लोग अपनी सेवा–शक्ति को ही अपनी अमूल्य सम्पत्ति मानेगे। समाज में उपयोगी बनने के लिए हमे आर्दशवादी एवं सिद्धातवादी विचार धारा की सत्यता प्रमाणित करनी होगी। जन–जन में यह सिद्ध करके दिखाना होगा कि आदर्श और सिद्धातों पर आधारित जीवन संभव है और ऐसा जीवन जीने में मनुष्य की हानि नहीं लाभ ही रहता है। ऋषियों के सदचितन को जन मानस में स्थायी रुप से बिठा देने से ही मनुष्य भौतिक उपलब्धियों की कमी होते हुए भी आध्यात्मिक जीवन के लिए तैयार रहेगा। निर्धन, फकीर, होने पर भी बड़े–बड़े महलों वाले उनके पैरों में गिरकर दया की भीख मॉगते है। इससे सिद्ध होता है कि मनुष्य की महानता बाहय नहीं आन्तरिक है। आंतरिक श्रेष्ठता के आधार पर ही उसकी उपयोगिता प्रमाणित होती है। भौतिक संपदाय तुच्छ है, थोड़े समय तक महानता या बड़प्पन जता कर नष्ट हो जाती है।

# प्रतीक्षा

श्रीमती मंजु सिंह

विचारों में खोई स्मृति अपने दिवंगत पिता के बारे में सोचने लगी उसके पिता समाज के प्रतिष्ठित व्यक्तियों में थे जो सत्य के पक्षपाती ईमानदार एवं अत्यन्त सहदय व्यक्ति थे। एक समय था जब डॉ0 एस0 डी0 माथुर के यहॉ गाड़ी, बंगला, नौकर, चाकर सभी कुछ था, सुख के अलावा दुःख का अनुभव इस परिवार ने किया ही नही था, पर अचानक इस परिवार को मानो ग्रहण सा लग गया और विपत्ति का पहाड़ टूटता ही चला गया। पिकनिक पर अपने परिवार के साथ निकले डॉ0 माथुर को क्या पता था कि लौट कर वे अपने बंगलें में वापस नही आएगें। बारिश का महीना था, सितम्बर महीने की घनघोर बारिश होने पर भी वे प्रकृति के मनोरम दृश्यों को देखने की इच्छा को नहीं रोक पाए और अचानक पिकनिक का प्रोग्राम बना डाला। प्रतीक्षा, श्रुति और स्मृति पापा के इस विचार से बहुत खुश थी उनकी पत्नी नयना न चाहते हुए उनकी खुशी के लिए अनमयस्क भाव से फियेट पर बैठ गई। घनघोर मूसलाधार बारिश तथा अंधेरें के कारण रास्ता साफ नही दिख रहा था, साथ ही एकान्त, विरान, एवं निर्जन था। जहॉ यदा कदा भूले—भटके कोई आदमी दिख जा रहा था। पुनः वही सन्नाटा, डॉ0 माथुर ने सोचा गाड़ी को तेज रफ्तार से चला कर इस निर्जन रास्ते को जल्द से जल्द पार कर लिया जाए पर होनी को कुछ और ही मंजूर था। तेजी से आती हुई सामने की ट्रक ने ऐसा टक्कर मारा कि डॉ0 माथुर वही पर चिरकाल के लिए सो गए। उनकी पत्नी नयना बेहोश हो कर गिर पड़ी सिर पर गम्भीर चोट आने के कारण उनकी स्मृति भी जाती रही। डॉ0 माथुर की तीनों बेटियां ऐसी भयावह स्थिति की कल्पना भी नही की थी। स्मृति मॉ को सम्हालने के लिए वही रूक गई। श्रुति और प्रतीक्षा को काफी संकट का सामना करना पड़ा, नदी, नालो के अनजान बीहड़ रास्तों को पार करने के पश्चात् दूर कही रोशनी दिखाई दी दोनो तेजी से बढ़ती हुई दरवाजे तक पहुॅच गई जोर से दरवाजा खटखटाया कुछ समय के पश्चात् एक अधेड़ उम्र का व्यक्ति दरवाजा खोलते हूए बोला कौन? उन दोनो ने करूण स्वर में कहा कृपया दरवाजा खोलिए वह व्यक्ति उन दोनों को देख कर पूछा कहिए क्या काम है? उन लोगों ने अपनी सारी बात स्पष्ट रूप से बतायी और वह अपनी गाड़ी से उनको मदद की सांत्वना देता हुआ चल गाड़ी तेजी से चली जा रही थी वे दोनो आश्वस्त होकर बैठ गई जल्दी ही घर से आवश्यक सामान लेकर वे अपनी मॉ के पास पहुॅच जाएगी। इस आशा में वे लगभग सो गई, परन्तु जब गाड़ी एक झटके के साथ लाल बॅगले के पास पहुॅची तो उन्हे उस व्यक्ति पर थोड़ा संदेह हुआ मॉ एवं पिता की स्थिति को याद करके चुप हो कर बैठी रही काफी दूर चलने के पश्चात् उस व्यक्ति ने गाड़ी पुनः रोक दी, परन्तु अॅधेरा होने के कारण कुछ भी स्पष्ट नही हो पा रहा था उस व्यक्ति ने दोनो को कार से नीचे उतरने को कहा और टार्च की रोशनी में तीनो चलने लगे चलते—चलते एक खंडहर सा मकान दिखाई पड़ा जहॉ टूटी—फूटी दीवारें कबूतर एवं चिड़ियों के घोसंले और दूर—दूर से कुत्तों की भौकने की आवाजें आ रही थी। ऐसे खडहर में प्रवेश करते हुए उसने कहॉ आइए थोड़ी देर विश्राम करने के पश्चात् आपकी मॉ के पास चलेंगें दोनों चुपचाप उस व्यक्ति के साथ उस खंडहर के अन्दर चल दी, वहॉ पहुॅचते ही उन्हें एक औरत की चीखने की आवाज सुनाई दी बाचाओ! बचाओ! थोड़ा पानी चाहिए, अरे कोई मुझे थोड़ा पानी तो दे दे! उसकी आवाज सुन कर वह अधेड़ व्यक्ति बोला घबड़ाइए नहीं यह कोई पगली है जो रात को यूॅ ही आ कर चिल्लाती है, आप लोग यहीं विश्राम करिए मै अभी बाहर से थोड़ी देर में आता हूॅ, कह कर वह व्यक्ति कही चला गया उसके जाने के

बाद दोनों बहने अभी सम्भली भी नहीं थी कि वह औरत जोर जोर से हँसती हुई उनके पास आ कर बैठ गई और कहने लगी भाग जाओ जल्दी से भाग जाओ, यह आदमी बड़ा जालिम एवं खूँखार है यह तुम दोनो को जिंदा नही छोड़ेगा इसी जालिम ने मेरी यह दशा की है। मैं पागल नही हूँ, मेरी बात पर विश्वास करो, यह कहते कहते वह औरत भूख एवं प्यास के कारण बेहोश हो गई। और चिरकाल के लिए सो गई वे दोनो उस औरत की मौत से बौखलाकर वहॉ से भाग निकली और दूर वीरानें में न जाने कहॉ भागती चली गई। स्मृति मॉ की बिगड़ती हुई हालत को देख कर घबराती हुई इधर–उधर देखने लगी बारिश थी कि रूकने का नाम नही ले रही थी तभी तेज रफ्तार से आती हुए एक फियेट दिखाई दी वह जोर से चिल्लाई प्लीज मेरी मदद करिए गाड़ी तुरन्त रूक गई उसमें से एक बहुत ही खूबसूरत युवक उतरा वह उसकी परिस्थिति को देखकर समझ गया कि इस समय उसकी मदद की समृति को बहुत ही आवश्यकता है। युवक ने कहॉ आप बिल्कुल मत घबराइए यह कहते हूए उसने स्मृति के पापा के मृतक शरीर को गाड़ी के पिछलें हिस्से में रखा तथा स्मृति अपनी मॉ को सम्हालती हुई युवक के साथ बैठ गई युवक ने उसकी मॉ को सम्हालते हुए उसका परिचय पूछा स्मृति ने सारी घटना को उसे स्पष्ट रूप से बता दिया। और अपनी दोनो बहनों के बिछड़ने तथा पापा की अचानक मौत और मॉ की स्मृति खोने की की दुर्घटनाओं से हताहत स्मृति युवक की आत्मीयता पूर्ण शब्दों को सूनकर फूट–फूट कर रोने लगी। उस युवक ने उसे बहुत समझाया तथ परिस्थिति का सामना करने के लिए उसे मजबूत करने का प्रयास करने लगा। पिता का अन्तिम संस्कार करने के पश्चात् स्मृति को मॉ के इलाज की चिंता होने लगी सोचने लगी कैसे मॉ का इलाज होगा, कभी अपनी दोनो बहनों को याद करके बिलख–बिलख कर रोने लगी। उस युवक को न जाने क्यों स्मृति से सहानुभूति बढ़ती चली गई और यही सहानभूति दोनो की मित्रता में बदल गई। एक दिन स्मृति लॉन में बैठी चाय पी रही थी न जाने कब उसका युवा मित्र उसक पीछे आ कर खड़ा हो गया, स्मृति ने उसे बैठने के लिए कहा और खुद उसके लिए चाय बनाने चली गई चाय लेकर लौटती हुई स्मृति ने कहा अब तक मैने आपका परिचय नही पूछाय आपका नाम क्या है? युवक ने कहा मेरा नाम शाश्वत है मै यहॉ के जाने माने उद्योगपति सेठ धर्मदास का बेटा हूँ। यह सुनते ही स्मृति अपनी गरीबी एवं टूटते अरमानों, परिवार के बिखरने, मॉ की अवस्था को सोचती हुई शाश्वत से दूर लॉन में बैठ गई। सोचने लगी कहॉ यह उद्योगपति का बेटा और कहॉ मैं गरीब असहाय मॉ की बेटी, शाश्वत उसकी बात को समझ गया और वह यह जान गया कि स्मृति बड़ी स्वाभिमानी एवं साहसी लड़की है उसने कहॉ स्मृति घबराओं नही मैं तुम्हारा मित्र हूँ। मैं तुम्हारी हर तरह से मदद के लिए तैयार हूँ। कल मॉ के इलाज के लिए मैं तुम्हारी साथ हॉस्पिटल चलूँगा तैयार रहना। दूसरे दिन शाश्वत् अपनी गाड़ी लेकर स्मृति के बंगले पर आया पर स्मृति पैसे के अभाव एवं संकोच के कारण मॉ के इलाज के लिए कतरा रही थी शाश्वत् ने कहा स्मृति चिंता मत करो तुम यदि मेरी मदद ही करना चाहती हो तो बदले में मेरी अंधी मॉ जिसकी आखें में लाखों पैसे खर्च करके भी नही लौटा सका उसकी ऑख बन कर मेरे साथ–जीवन भर रह कर इस उपकार का बदला चुका सकती हो क्योंकि मुझे आज तक ऐसी ही साहसी एवं विषम परिस्थितियो का सामना करने वाली युवती की तलाश थी। और आज शाश्वत एवं स्मृति दाम्पत्य सूत्र में बँध चुके है। मॉ कि स्मृति वापस आ चुकी है अपने बगलें में वह अपने मेहनत व स्वालम्बन से घर को सजा सवॉर कर रखती है। मॉ मन ही मन ईश्वर को धन्यवाद देती है कि भगवान यदि पति छीना तो उसके स्थान शाश्वत जैसा बेटा भी दिया है। मॉ इन्ही अतीत की स्मृतियों में खोई विचार मग्न थी। तभी अपनी गाड़ी से स्मृति एवं शाश्वत उतरे मॉ को अपने साथ ले जाने को आग्रह कर रहे थे पर वह अपनी पति की स्मृति को छोड़ने को तैयार नही थी। मॉ के बाल सफेद हो गए है और अब वह हमेशा बीमार रहने लगी है आज मॉ की हालत बहुत खराब हो गई फोन करने की भी ताकत समाप्त हो गई एकाएक उसकी सांस रूकती हुई महसूस हुई उस समय उसके आखों के सामने अतीत के दृश्य क्रमशः आने लगें और वह घबरा के किसी तरह से फोन के पास पहुँची स्मृति, जल्दी से आ जाओ यह कहते–कहते उसकी आवाज रूक गई और वह जमीन पर गिर पड़ी उसकी ऑखें खुली की खुली रह गई। प्रतीक्षा में, दोनों खोई हुई बेटियों कि न जाने कहॉ खो गई दोनों इतनी बड़ी दुनियॉ में, प्रतीक्षा ही रह गई स्मृति से मिलने की । स्मृति आज बड़ी ही अस्त व्यस्त अवस्था में घबड़ा कर चली आई मॉ का फोन सुन कर परन्तु यहॉ तो सब कुछ समाप्त हो चुका था मॉ का साया हमेशा के लिए समाप्त हो चुका। अब रह गई प्रतीक्षा सिर्फ प्रतीक्षा अपनी बिछड़ी हुई बहनों से मिलने की...........। शाश्वत यह दिलासा देता हुआ गाड़ी पर बैठ गया यह कहते हुए स्मृति प्रतीक्षा करो उस क्षण की जब मै तुम्हारी बहनों को तुमसे मिला कर रहूगॉ यह मेरा वचन है और आज भी स्मृति दरवाजे पर दौड़ कर आती है यह सोचकर की सम्भवतः आज शाश्वत मेरी बिछड़ी हुई को मुझसे अवश्य ही मिलवा देगा।

# हटियन सेनुरा महंग भये बाबा, चुनरी भई अनमोल!

✍हीरामणि सिंह 'साथी'

**लो**क संस्कारों में विवाह संस्कार सर्वाधिक आकर्षक रोचक और महत्वपूर्ण माना जाता है। देश के विभिन्न भागों में अनेक रीतियां, रस्में और पद्धतियां हैं। लेकिन इस संस्कार की रोचकता सर्वत्र एक सी ही है। हालांकि शास्त्र सम्मत बहुत थोड़े से ही कार्य संम्पादित होतें है। यही कारण है कि जातिगत, समाजगत और स्थानगत अनेकानेक भेद पाये जाते हैं। पर्वतीय अंचलों मे कुछ और रस्में है तो मैदानी इलाकों मे कुछ और तथा आदिवासी क्षेत्रों मे कुछ और तरह की रस्में है। लेकिन हर रस्म का अपना एक अलग आकर्षण है। हर रस्म अपने तरफ देखने वालों को खीचती है, आकृष्ट करती है जोड़ती है। अपरिचित व्यक्ति भी बहुत सहज होकर सब कुछ देखता समझता है। जितनी ही रस्में है उतने ही लोकाचार हैं उतने ही गीत भी इस संस्कार से जुड़े हुए हैं। वह खोजने के अभियान की मंगलकामना से लेकर बिदाई तक गीत ही गीत भरे हुए है और सबकी अलग अलग धुनें भी हैं, अलग अलग संवेदनाएं भी है।

द्वारचार की रस्म से लेकर कोहबर तक की यात्रा गीतों की छांह–छांह ही सम्पन्न होती हैं। अवधी भोजपुरी और बघेलखण्ड के इलाकों में यह संस्कार कहां कैसे सम्पन्न होता है। और कब कहां कौन कौन से गीत गाये जातें हैं–उसकी एक छोटी सी झलक प्रस्तुत है।

पुराने जमाने की महगांई एवं चीजों के आभाव को व्यक्त करने वाले तमाम विवाह गीत प्रचलीत हैं जो उस समय की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति के गवाह हैं। एक बेटी पिता से कहती है– हे बाबा बाजार में सिंदूर महंगा हो गया है और चुनरी तो किसी भी कीमत पर उपलब्ध नही है। हे बाबा ! इसी सिंदूर अर्थात विवाह हो जाने के कारण आज मै तुम्हारे देश को छोड़ कर ससुराल जा रहीं हूँ। सिन्दूर का महंगा होना तथा चुनरी का अनमोल होना दोनो गरीब पिता के बेटी के बाधक बने हुए हैं। पिता की गरीबी, अभाव तथा बेटी के घर छोड़ने के गीत में करूण की अक्षय अटूट धरा ले कर फूट पड़ता हैं–

*'हटियन सेनुरा महंग भये बाबा!*
*चुनरी भईल अनमोल।*
*यहिं रे सेनुरबा के कारन बाबा!*
*छोड़ेउं मैं देस तोहार।'*

बेटी के विवाह के लिए पिता द्वारा वर खोजने का संकट तथा अधिक दहेज मागने के कारण वर मिलने में कठिनाई आदि के अनेक प्रसंग लोक गीतों मे भरे पड़े हैं जिसे सुन कर हृदय द्रवीभूत हो उठता है। एक पिता अपनी पुत्री से कहता है– हे बेटी! तुम्हारे लिए मैने योग्य वर काशी बनारस और सरूवार (सरयूपार – प्रदेश – वर्तमान गोरखपुर तथा बस्ती जिला) में खोजा किन्तु तुम्हारे लायक योग्य और सुन्दर वर मुझे कही नही मिला। अतः हे बेटी! अब तुम्हे कुमारी ही रहना पड़ेगा? बाप की विवशता, असमर्थता एवं खीझ इस विवाह गीत में व्यक्त हुआ है–

*'हेरेउं कासी हेरेउं बनारस*
*हेरेउं देश सरूआरि।*
*तोहरी जोग बेटी! सुधर वर नाही*
*अब बेटी रहबू कुंवारी।*

पूरब और पश्चिम दिशा में सागर (सरोवर)फैला हुआ है जिसमें कमल लहरा रहें हैं उसी सागर में दूर देश से आकर दूल्हा राजा धोती पछार रहें हैं। संयोग से उसी जलाशय में स्नान करती उनकी होने वाली दुल्हन भी मिल जाती है। लड़की अपरिचय की अवस्था मे प्रश्न कर बैठती है। तुम किसके पौत्र। तुम किसके बेटे हो? और तुम्हारी बहन का क्या नाम है? किस चीज का व्यापार करने चले हो और किसके सागर मे नहा रहे हो? तब वह अपना पैत्रिक परिचय देकर बताया कि मैं सिन्दूर का व्यापार करने चला हूँ। इतना सुनते ही प्रसन्न युवती अपने भावज से आकर कहा कि जिस वर को आपने नगर नगर ढुढ़वाया था वही मेरे सागर में नहा रहा है। इसके बाद वर को बुलवाया जाता है किन्तु भाभी का अंतिम वाक्य *'लइ जाउ बैरनि हमारी'* ननद के स्वत्व एवं सम्मान पर गहरी चोट करता है। साथ ही पुराने समय से चले आ रहे ननद–भाभी के आपसी बैर भाव को भी उजागर करता है– 'पुरब–पछिम कर सागर बाबा! पुरइन हालर लेइ।

*ते सगरे दुलहे धोतिया पछारइं,*
*दुलहिन पूछइ एक बातें*
*केकर अहउ तू नतिया अउ पुतवा,*
*कबने बहिनिया के भाइ।*
*कबने बनिजिया चलेउ वर सुन्दर*
*केकरे सगरे नहात।*
*आवउ ननदोइया पलंग चढ़ि बैठउ*
*कूंचउ महोवा क पान।*
*गउँआ बाहेर होइके उड़िया फनावौ लइ जाउ बैरनि हमारि'।*

हमारे समाज में बाल विवाह की कुरीति प्राचीन

काल से चली आ रही है। जिसके कई राजनैतिक तथा सामाजिक कारण रहे हैं। इतिहास जिसका आज भी साक्षी है। किन्तु आगे चलकर एक कुरीति बन गया।

शैशव और बाल्यावस्था की दहलीज पर पांव रखती एक छोटी बालिका मां की गोंद में सो रही थी। अचानक बाजा की आवाज सुनकर उसकी नींद टूट जाती है। बेटी मां से पूछती है कि किसके दरवाजे पर बाजा बज रहा है तथा किसका विवाह हो रहा है? मां कहती है–बेटी! एक तरफ तो बहुत बड़ी पगली लगती हो ओर दूसरी तरफ तो बड़ी चालाक और सयानी दिखती है। तुम्हें नहीं मालूम कि यह बाजा तुम्हारे पिता के घर में बज रहा है और तुम्हारा ही विवाह होने जा रहा है।

लड़की को अपने विवाह की भी खबर न होना उसकी अबोधता एवं लड़कपन का बोध कराता है।

*'सोवत रहलेउं मैयया जी के कोरवा, निंदिया उचटि गयी मोर।*

*केकरे दुआरे मैयया बाजन बाजइ, केकर होत विआह।*

*तू बेटी आउर तू बेटी बाउर तू बेटी चतुर सयान।*

*तोहरे बपइया घर बाजन बाजइ, तोहरइ तोत वियाह।'*

एक प्रसिद्ध विवाह गीत में लड़की सोनार से कहती है कि सारे अंगों के लिए गहने, हाथ के लिए कंगन तथा सोलह श्रृंगार वाले आभूषणों को गढ़कर तैयार करो। हमारी बेटी के योग्य मांग टीका बनाओ जिसे पहन कर वह अपने पति के घर जा सके। सारे आभूषण बनकर आ जाते है। सोना चांदी की भरमान होने पर भी बेटी का मुंह झुका तथा मलिन देखकर मां आशंका से पूछती है कि बेटी! किस चीज की कमी हो गयी जो इस प्रकार निराश हो? बेटी कहती है कि मां! मुझे चांदी की कमी हुई है न सोना की, न दहेज की। हमारे और पति के रूप–रंग का अंतर माथा झुकाने को बाध्य कर रहा है। मेरा गोरापन तथा पति का सांवलापन सबसे बड़ा बाधक है। बेमेल विवाह तथा लड़की की असहपति का व्यक्त करना प्रस्तुत विवाह गीत अपने समय का विद्रोह छिपाये हुए है

*'गढ़ सोनरा अंगन, गढ़ सोनरा कंगन, गढ़ सोनरा सोरहौ सिंगार।*

*बेटा के जोग गढ़उ माथे के ओकंवा पहिरि सजन घर जाई।*

*की मोरी बेटी हो सोनवा कम भये कि रूपवन भये थोर।*

*की मोरी बेटी हो दायज कम भये बइठ काहे माथ झुकाय।*

*नाही मोरी माया हो सोनवा कम नहीं रूपया भये थोर।*

*हम प्रभु गोरी हो ओइ प्रभु सांवर ओहि गुन मथवा ओनाई।'*

सप्तपदी (भांवर) के बाद भाई को हार चुका है लेकिन बहन भाई की हार को हार नहीं मानतीं। भाई–बहन का यह कैसा अटूट एवं मधुर रिश्ता है? आज तक ऐसा देखा गया है कि पत्नी पति की पराजय तो देख सकती। पानी की धार न तोड़ने की चेतावनी बहन की अपनी गरिमा से बढ़कर भाई की गरिमा की प्रतिस्थापना है। भाई के दांव पर अपने आप को हारना उसे कबूल नहीं।

बहन भाई से कहती है भइया! धीरे–धीरे पानी गिराना जिससे धार टॅट न सके। अगर असावधानी से पानी करी धार टूट गयी जो अपनी प्यारी बहन को हार जाओगे? क्या कोई भाई आसानी से अपनी बहन हारता है? .........

प्रस्तुत विवाह गीत में छिपा हुआ प्रतिष्ठा का प्रश्न, पीड़ा की संवेदना हर भावुक मन का झकझोर कर रख देता है।

*भइया ! धीरे–धीरे पनिया गिरावउ*
*धार जिनि टूटइ हो!*
*भइया! पनिया के धार जिनि टूटइ*
*बहिनि हारि जइबअ हो।'*

इस प्रकार हम देखते है कि विवाह गीत मात्र संस्कार गीत ही न होकर हमारे जय–पराजय एवं आस्था–विश्वास के भी साक्षी रहे हैं। इन गीतों में पीड़ा की सिसक भी है और उल्लास का आहलाद भी है। आंसुओं की अजस्त्र धारा भी है और फूलों से झरते मुस्कान भी हैं। विवाह गीत करूणा के सागर हैं, भावना के हाहाकार है, जिसे सुनकर संवेदनशील प्राणी रोने और छटपटाने लगता है।

# पिच्च संस्कृति

भारत अनेक संस्कृतियों वाला देश है। इन्हीं संस्कृतियों मे से पिच्च संस्कृति को एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। यह एक ऐसी संस्कृति है जिस पर हम भारत वासी अपना सिर गर्व से ऊँचा किये रहते है। लेकिन जैसा कि प्राकृति का नियम है की अच्छाई के साथ बुराई भी जन्म लेती है हमारी इस संस्कृत को मिटाने के लिये अनेक संस्थाओं का जन्म हो चुका है जो हमारी इस संस्कृति को मिटाने के लिये दिन रात एक किये हुये है। लेकिन हम अपने पूर्वजो कि विरासत को इतनी आसानी से मिटने नहीं देंगें जिसे उन्होने अपने खून पसीने से सींच कर इस मुकाम तक पहुचाया है। आज आप हर गली कूचे स्कूल कालेज की दीवारो पर यह लिखा हुआ जरूर देखते होंगें कि "यहां थूकना सख्त मना है या स्वक्षता का ख्याल रखें आदि–आदि"। ये इस संस्कृति को मिटाने वालों की गहरी साजिश है वो हमारी इस संस्कृति को फलता फूलता नहीं देख सकते।

लेकिन धन्य है हमारे वो शूरवीर जिन्हे अपनी इस संस्कृति पर नाज है वो जहां भी ऐसा लिखा हुआ पाते है वहीं पर थूककर एक ऐसी चित्रकारी का नमूना पेस करते है जिसे बनाने के लिये बड़े–बड़े कलाकारों के पसीने छूट जायेंगें फिर भी वो ऐसा चित्र कभी ना तो बना पाये है और न बना पायेंगें।

रही बात स्वच्छता की, तो हम स्वच्छता जैसी मामूली चीज के लिये हम अपनी इस संस्कृति की कुर्बानी नहीं दे सकते, हां ये हो सकता है कि हम अपनी इस संस्कृति को बचाने के लिये खुद की कुर्बानी जरूर दे सकतें है।

## चीज

- खाने की चीज़ है ग़म
- निगलने की चीज़ है तो ग़म
- पीने की चीज़ है तो ग़म
- देने की चीज़ हे तो दान
- लेने की चीज़ है तो इज्जत
- दिखाने की चीज़ है तो दया
- बोलने की चीज़ है तो सत्य
- करने की चीज़ है तो सेवा
- फेंकने की चीज़ है तो ईर्ष्या
- त्यागने की चीज़ है तो मोह

आज खतरे में अहिंसा का वतन है यारो
अब तो हर मोड़ पे नफ़रत की घुटन है यारों
तुमने सरहद पे दनअनदाजी की जुर्रत की है
अब दरअन्दाज़ों की क़िसमत में कफ़न है यारों

# इंटरनेट का दिनप्रतिदिन बढ़ता उपयोग

## इन्टरनेट का इतिहास

सन् 1970 में डारपा (द डिफन्स एडवांस्ड रिसर्च प्रोजेक्ट्स एडमिनिस्ट्रेशन) ने कम्प्यूटर से कम्प्यूटर के मध्य एक सुरक्षित संचार माध्यम की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए एक कमीशन बैठाया। यहीं से इंटरनेट का जन्म हुआ। अगले 20 सालों में इंटरनेट का प्रयोग पृथक रुप से सैनिक एवं शैक्षणिक नेटवर्किंग में किया जाने लगा, जिसने कम्प्यूटरों को सर्वप्रथम, राष्ट्रों से और अततः पूरे विश्व से जोड़ दिया।

इंटरनेट के जन्म के पीछे बहुत सरल धारणा है, जिसे आसानी से समझा जा सकता है–दो कम्प्यूटर एक तार से जुड़ रहे है। एक कम्प्यूटर दूसरे कम्प्यूटर से संपर्क करने के लिए संकेत के रुप में आग्रह करता है, दूसरा कम्प्यूटर व्यस्त होने की दशा में आग्रह स्वीकार नहीं करता अथवा स्वीकार कर लेता है।

तब दोनों कम्प्यूटर एक दूसरे की भाषा को समझकर कार्य करने लगते है और एक दूसरे के डाटा का आदान प्रदान भी कर सकते हैं।

यह एक साधारण सा उदाहरण है। आइए, अब हम इन कम्प्यूटरों को एक तार के स्थान पर इंटरनेट से जोड़े। अब इन दो कम्प्यूटरों के बीच संपर्क के लिए दर्जनों कम्प्यूटर हो सकते है।

अब यह परिस्थिति कुछ जटिल प्रतीत होती है, क्योंकि अब एक कम्प्यूटर को दूसरे कम्प्यटर से बात करने के लिए लगभग 3000 मील की दूरी तय करनी पड़ेगी, लेकिन इंटरनेट इस दूरी को इतना आसान बना देता है कि उपभोक्ता के लिए उसका डाटा का आदान–प्रदान पारदर्शी प्रतीत होता है।

इसके के लिए आपके कम्प्यूटर को दूसरे कम्प्यूटर तक अपना डाटा पहुँचाने के लिए काफी रास्तों एवं हजारों मील की दूरी तय करनी पड़ सकती है, इसलिए आपको यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि आपका डाटा सहीं स्थान पर पहुंचा या नहीं।

1980 में कम्प्यूटर के स्वरुप में विकास होने के साथ–साथ इंटरनेट का भी विकास हुआ। ज्यादा से ज्यादा कम्प्यूटर ऑन–लाइन होने लगे, जिसने उपभोक्ताओं की संख्या में दिनोदिन बढ़ोतरी की।

वर्ष 1990 के आगमन के साथ ही कनेक्शन काल की शुरुआत हुई। शीत युद्ध की समाप्ति के बाद सैनिक संचार के माध्यमों ने दूसरे साधनों को छोड़कर पूरी तरह इंटरनेट के विदेशी उपभोक्ताओं एवं कम्प्यूटरों में बढ़ोतरी होने लगी।

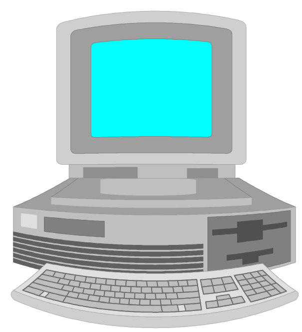

इंटरनेट पर संदेश अब तक केवल टेक्स्ट के रुप में दिए जाते थे, लेकिन डैस्कटॉप की शुरुआत ने ग्राफिक्स के महत्व को बढ़ावा दिया। संदेशों में ग्राफिक्स का सम्मिश्रण एच.टी.एम.एल. के माध्यम से संभव हो सका। इस प्रकार लोग एच.टी.एम. एल. फाइल का प्रयोग करने लगे।

इस प्रकार इंटरनेट के रुप में एक विशाल संचार तंत्र का जन्म हुआ। इस तेजी को वर्ल्ड वाइड वेब ( ) के रुप में जाना गया।

## उपयोगी सामग्री कैसे तलाशें

इंटरनेट जानकारी की दृष्टि से एक सागर के समान है, लेकिन सवाल यह उठता है कि इसमें उपलब्ध बेशुमार जानकारियों में से उपयोगी और मनपंसद सामग्री कैसे तलाश करें।

इंटरनेट से संचार प्रक्रिया इतनी आसान और तीव्र हो गई है कि कुछ ही क्षणें में जानकारी

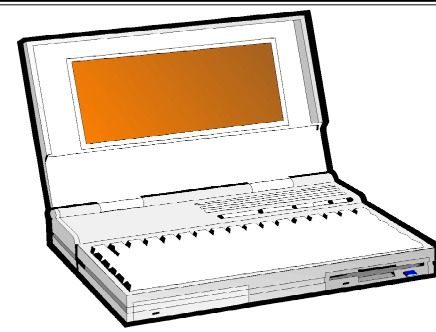

विश्व के किसी भी कोने से कहीं भी पहुंच सकती है। ज्ञान के क्षेत्र में पारदर्शिता इतनी बढ़ गई है कि एक देश में होने वाले शोध, अध्ययन, प्रकाशन, वाद–विवाद, वार्ताओं, खोज, अन्वेषण, परीक्षण जांच के अलावा पर्व, मेले, प्रर्दशनियां, खेल–कुछ, नृत्य–संगीत और चित्रकला जैसी हर चीज की जानकारी आप इंटरनेट के जरिए विश्व के किसी कोने में बैठे हासिल कर सकते है, लेकिन तलाश करने का कार्य समुद्र में से मोती निकालने जैसा कठिन है। इसमें विविध विषयों पर उपलब्ध बेशुमार सामग्री में से अपने उपयोग की सामग्री के चयन के लिए कुछ सर्च इंजन विकसित किए गए हैं। इन सर्च इंजनों के जरिए आप इंटरनेट पर अपनी इच्छित सामग्री/विषय पर पहुंच सकते है। मान लीजिए आपको खेल में दिलचस्पी है। आप इंटरनेट के किसी सर्च इंजन को निर्देश देते है और कुछ ही क्षण बाद आपके कम्प्यूटर स्क्रीन पर खेल संबंधी तमाम तरह की जानकारी आ जाएगी।

इंटरनेट से ही जुड़ा एक और शब्द है वेब साइट। वेब साइट की शुरुआत अंग्रेजी के तीन अक्षरों डब्लू. डब्लू. डब्लू. से होती है, जिसका आशय है वर्ल्ड वाइड वेब। जो लोग या प्रतिष्ठान इंटरनेट पर सामग्री उपलब्ध कराते है, उनकी भी एक निश्चित वेब साइट होती है, जिसे वेब साइट का पता या नाम मालूम नही होगा, तब तक आप संबंधित सामग्री पाने में सफल नहीं हो पाएगे।

# हंसगुल्ले

✸एक साहब–नवाब साहब आपके ही वालिद बहुत ही भले इंसान थे। उनके इंतेकाल पर हमें बेहद अफसोस है।

नवाब साहब एक बात तो बताईये जनाजे में शरीक सभी लोग रो रहें हैं। लेकिन आप के आँख में अब तक कोई आँसू नहीं आया। क्या आपको अपने वालिद की मौत की मौत का कोई गम नहीं?

नवाब साहब– अफसोस तो है, लेकिन रो नहीं सकता।

साहब चौककर क्यों?

नवाब साहब– अगर मै रोया तो मेरे आँसू कौन पोंछेगा।

आज कम्बख्त सुलेमान भी नही आया ।

✸दीपू (पापा से) पापा आप यह स्कूटर क्यों साफ कर रहें है?

पापा–बेटा सफाई करने से स्कूटर अच्छा लगेगा और सफाई ईश्वर का दूसरा नाम है।

दीपू–पर पापा मैने आपका रखा हुआ सारा चमचम साफ कर दिया तो मम्मी ने मुझे बहुत मारा ।

✸पति देव शराब के नशे मे धुत घर पहुंचे। थोड़ी देर के बाद बीबी से बोले,लगता है बाथरूम में कोई है। जब मैने दरवाजा खोला तो बत्ती अपने आप जल गई और जब दरवाजा बंद किया तो बत्ती अपने आप बुझ गयी ।बीबी ने अपना सिर पीटते हुये कहा हे भगवान कितनी बार समझाया है कि इतनी ज्यादा न चढाया करो ।अरे वो बाथरूम नहीं फ्रिज था।

✸सिपाही (चोर से) :तुमने इस की जेब कैसे काटी?

चोर : वाह, बहुत खूब!वर्षो की मेहनत मै आपको मिनटो मे कैसे सिखा दूं।

✸एक क्रिकेट खिलाड़ी बीमार पड़ा तो डॉक्टर ने कहा,"ओफ,तुम्हे तो 105 डिग्री बुखार है।"खिलाड़ी ने उत्साहित होते हुये पूछा,"पिछला रिकार्ड क्या है।

✸रीता गायन के अभ्यास में निरंतर विध्न पड़ते देखकर पड़ोसन से बोली,"क्या आप अपने कुत्ते को रोक नहीं सकती ?मै अभ्यास करती हुं और यह भूंकता रहता है।

पड़ोसन : लेकिन शुरूआत तो आप ही करती है।

✸एक महिला ने बैंक जाकर नई चैक बुक मांगी । कार्ड देखकर एक कर्मचारी ने बताया कि आप पहले तीन चेक बुक ले चुकी हैं। क्या वो खत्म हो गईं।

महिला : नहीं, वे तो कहीं गुम हो गई।

कर्मचारी : आप को चेक बुक हिफाजत से रखनी चाहिये वरना कोई आपके हस्तसक्षर करके पैसे निकाल सकता है।

महिला : नहीं, मै इतनी मूर्ख नहीं हूं । मैने पहले ही सारे चेको पर अपने हस्ताक्षर कर दिये है।

✸मीना (सुरेश से) :तुम खना खा लेन,मै डाकखाने जा रही हूं।

सुरेश : खा कर कब लौटोगी?

✸नौकर : मालकिन से, जली हुई पावभाजी का क्या करूं?

मरलकिन : तुम्हारे साहब ने नाश्ता कर लिया?

नौकर :हां।

मालकिन : फिर फेंक दो।

✸पार्टी में महिलाओं के बीच जेसे ही उम्र की बात चली, बेटे ने इशारे से अपनी मां को बुलाया और कहा,"अम्मा उम्र सोच समझ कर बताना। पिछले कई पार्टियों में तुम मुझसे भी छोटी हो गयी थी।"

✸पुत्र : पापा,पापा,आप की दा .........

पिता : कितनी बार कहा है, खाना खाते समय बोलना नहीं चाहिये। चुप चाप खाना खाओ।

खाना खा चुके तो पिता बोले : हां,अब कहो ,तुम क्या कहि रहे थे ?

पुत्र कुछ नहीं पापा, मै कह रहा था कि आप की दाल में मक्खी गिर गई है।

✸एक आदमी दूसरे से आपकी उम्र पचास साल है। दूसरा जी हां लेकिन आपको कैसे मालुम हुआ। पहला मेरा भाई पच्चीस साल का है और वह आधा पागल है ।

✸इम्तेहान मे सवाल था कि क्रिकेट पर मजमूम लिखिये। एाक बच्चे ने जवाबी परचे पर स्याही के कतरे डाल कर दिया कि बारिश की वजह से मैच नहीं हो सका।

उस्ताद ने परचे पर जीरो बना दिया और लिख दिया कि बारिश के साथ–साथ ओले भी पड़े ।

✸एक शोहर की दो बीबीयां आपस में लड़ रही थी, एक कह रही थी आज बुद्व है। दूसरी कह रही थी आज जुमेरात है।

शौहर ने उनकी बात सुनकर गुस्से में अपना सिर पीट लिया और चिल्लाया तो क्या मै पागल हो गया हूं , जो जुमे कि नमाज पढ़कर आ रहा हूँ।

✸पहला दोस्त तुमने सर्कस देखा है ?उसमें एक मोटी औरत एक पतले जोकर कुश्ती लड़ती है। उसे मारती पीटती है उसे गालियां देती है। फिर भी वह मुस्कुराता है ।

दुसरा दोस्त :यह सब तो मेरे घर में भी होता है ।

## बधाई हो

प्यारी बहन प्रतिभा मिश्रा एवंम रींकू मिश्रा (बहनोई) को पुत्र रत्न की प्राप्ति पर पूरे परिवार की ओर से बधाई और ढ़ेर सारी शुभकामनाएं

रजनीश कुमार तिवारी "राज"


निवास☎:650996

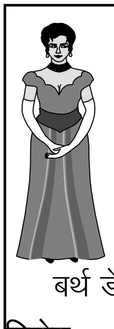

**अनुप पेपर स्टोर**

20/51, चौक, इलाहाबाद

हमारे यहॉ सभी प्रकार के रंगीन पेपर, पन्नी, बेलवेट पेपर एवंम बर्थ डे की सजावट सम्बधी सभी सामग्री उचित मूल्य प्राप्त करें।

विशेषः शादी विवाह के उपलक्ष में साड़ी, फूट, सूट, पैकिंग के लिए सम्पर्क करें।

सिलते ही लब हो जाये पहनते ही रिश्ता तय हो जाय

**पोज टेलर्स**

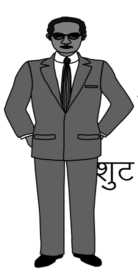

137–ए, राजरुपपुर, इलाहाबाद

हमारे यहॉ सभी प्रकार के लेडिज जेण्टस शुट की सिलाई विशेष कारीगरों द्वारा होती है।

प्रो0 हरी ओम प्रजापति

प्यारे बच्चों– आओ! कल्पना के संसार मे तुम्हारा स्वागत है। हमें पता है तुम लोगो को कहानियाँ सुनना बहुत पसंद हैं। पर क्या आप सब केवल कहानियाँ सुनते ही है या उन्हें याद कर उनसे कुछ सीखते भी हैं। हम आप को कुछ ऐसी ही कहानियाँ सुनायेंगें जिनसे आपका मनोरंजन तो होगा ही साथ ही कुछ नया सीखने को भी मिलेगा। उस सीख को आप अपने जीवन में उतारिएगा। आपके व्यक्तित्व का विकास और भी बेहतर ढंग से होगा। साथ ही ये सीख आपको अपने जीवन के दैनिक व्यवहार में भी मदद देंगी। देखा! बच्चो। जो बच्चा माता–पिता गुरूजनों, बड़ो तथा मित्रो की बात का ध्यान नहीं रखता वह भी मुसीबत में फँस जाता है। पर आप सब ऐसा मत करिएगा अच्छा! फिर मिलेगें एक नई कहानी के साथ अगले अंक मे। तुम्हारी अपनी दीदी– **ज्योति नगरिया**

# लालची सेठ

मीना पाण्डेय
कक्षा 9

**रा**मागढ़ का कालू राम सेठ बेईमान लालची और कुछ मूर्ख भी था। राम लाल हमेशा कालू राम की दुकान से ही सामान खरीदता था एक दिन राम लाल ने सेठ राम से 1 हजार रूपये कर्ज। मांगे सेठ ने कहा अगर तुम्हारे पास कोई जेवर हो तो उसे मेरे पास गिरवी रख दो तभी मै तुम्हे रूपए दे सकूंगा। रूपए पैसे के मामले में मेरा उसूल है राम लाल ने अपनी पत्नी का सोने का हार दे दिया जो बहुत कीमती था सेठ कालू राम ने अपनी शर्त भी बताई देखो भई इस फसल पर यदि तुम यह हार नही छुड़ाओगे तो तुम्हे इस हार से हाथ धोना पड़ेगा रूपए ले कर रामलाल ने अपने खेतो में खूब मेहनत कर के बढ़िया फसल उगाई फिर खेती की फसल बेच कर 1 हजार मूल और ब्याज के पैसे ले कर वह एक दिन सेठ जी के पास गया और बोला सेठजी यह लीजिए अपने रूपए और मेरा सोने का हार दे दीजिए।

सेठ के मन में लालच समा गया था वह बेईमानी पर उतर गया उस ने कहा मुझे बड़े दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि मै तुम्हारा हार नही दे सकता क्योंकि कुछ पहले ही वह हार चोरी हो गया तुम दंड में उस हार के मुझसे दो हजार रूपए ले लो। आप पागल हो गए हैं क्या सेठजी रामलाल गुस्से से बोला तीस हजार के हार के दो हजार में ले लूँ। फिर तो मै कुछ नही कर सकता भई राम लाल ने सोचा कि लड़ने झगड़ने से कोई फायदा होने वाला नही है उसे धैर्य और बुद्धिमानी से काम लेना होगा। घर आकर उसने अपनी पत्नी को सारी बात बताई फिर पति पत्नी दोनो ने एक योजना बनाई

अगले दिन राम लाल सेठजी के यहाँ फिर गया और अपना हार वापस माँगा तभी वहा राम लाल की पत्नी भी पहुँच गई और पति से जोर जोर से कहने लगी आप क्यों सेठजी को तंग कर रहे हैं छोड़िये उस हार को वैसे मै सौ हार बना लूंगी क्योंकि मुझे अभी एक जादुई पत्थर मिला है जादुई पत्थर का नाम सुन कर सेठ चौका बोला अरे रूको भई रूको कैसा जादुई पत्थर है तुम्हारे पास जरा मुझे भी तो कुछ बताओ। रामलाल की पत्नी ने धीरे से कहा उस पत्थर को लोहे से छुआने पर लोहा सोना बन जाता है ऐसा तुम कैसे कह सकती हो सेठ ने आश्चर्य से पूछा क्या तुमने ऐसा करके देखा है देखा है तभी तो विश्वास के साथ कह रही हू क्या तुम मुझे वह पत्थर दिख सकती हो दिखा तो सकती हूँ। सेठ जी लेकिन उस का फायदा आपको कुछ नही होगा। रामलाल की पत्नी बोली दरअसल वह पत्थर जिस के पास रहता है फायदा भी उसी को नजर आता है। मुझे इनके जादुई पत्थर का कमाल देखना चाहिए कि कैसे लोहा सोना बन जाता है। सोच कर सेठ रात के समय चुपके से रामलाल के घर पहुच गया रामलाल और उस की पत्नी जानते थे कि लालची सेठ सच्चाई का पता लगाने उनके घर जरूर आएगा तभी बाहर कदमो की आहट होने पर दोनो को समझते देर न लगी कि लालची सेठ सच्चाई का पता लगाने आया है। राम लाल की पत्नी सेठ को सुनाने के लिए जोर–जोर से कहने लगी हे जादुई पत्थर इस लोहे के कड़े को सोने का बनादो मै छुआ रही हूँ राम लाल खुशी से चीखा अरे वाह कमाल हो गया लोहे का कड़ा सोने का बन गया जरा लोहे की इस छड़ से छुआ कर देखो ये जादुई पत्थर लोहे की छड़ को सोने का बना दो मै छुआ रही हूँ रामलाल एक बार और जोर से चीखा अरे वाह कमाल हो गया छड़ सोने का बन गया अफसोस हमारे पास और कोई लोहे की चीज नही है यह सब सुन सेठ पक्का विश्वास हो गया हक सचमुच इन के पास कोई जादुई पत्थर है अगले दिन सेठ राम लाल का हार ले कर सवेरे सवेरे उस के घर पहुँच गया फिर हार उसे सौप कर बोला यह लो भई अपना सोने का हार कल बहुत खोजा तो यह मुझे घर में ही मिल गया अपना हार पा कर रामलाल और उस की पत्नी बहुत खुश हुए बोले आप का बहुत बहुत धन्यवाद सेठजी इस में धन्यवाद की क्या बात है सेठ हें हें कर हंसता हुआ बोला किसी की अमानत को लौटाना तो मेरा फर्ज है फिर कुछ क्षण रूक कर सेठ ने आगे कहा राम लाल कल तुम लोग किसी जादुई पत्थर की बात कर रहे थे क्या तुम वह पत्थर मुझे सिर्फ एक दिन के लिए दे सकते हो कल तुम्हे वह लौटा दूंगा दे तो सकता हूँ सेठजी किंतु आप मुझे क्या देंगे मै सिर्फ 10 हजार 1 दिन के लिए दूंगा। मै एक ही रात में लाखो का सोना बना लूंगा सोच सेठ ने रामलाल को 10 हजार रूपए देकर उस से वह पत्थर ले लिया रात होने लगी पर सेठ ने लोहे की एक हंडी से वह पत्थर छुआते हुए कहा हे जादुई पत्थर लोहे की हंडी को सोने का बना दो पर वह हंड़ी लोहे का लोहा ही रही सोना नहीं बनी फिर उसने लोहे की कड़ाही से पत्थर छुआ कर वही बात दोहराई लेकिन कड़ाही भी सोने की नहीं बनी इस तरह वह पागलों की तरह लोहे की सारी चीजों पर पत्थर छुआने लगा फिर पत्थर को गुस्से में आकर एक तरफ फेंक दिया सेठानी उस की हरकत गौर से देख रही थी वह मुसकराती हुई बोली लगता है इस बार तुम्हारा किसी सवासेर से पाला पड़ा है तुम्हारे जैसे लालची और बेईमान आदमी की यही हालत होती है सेठ अपना सिर पकड कर बैठ गया हार के साथ–साथ उसे 10 हजार रूपए से भी हाथ धोना पड़ गया आगे से फिर कभी उसने लालच न करने की कसम खाई। *0*

# पैसा क्या है? रिश्वत क्या है?

✍ ''राही अलबेला''

रामधन चाचा की लड़की विवाह योग्य हो गई है। उसके विवाह के खर्च को लेकर रामधन चाचा आश्वस्त है। उसका प्रबन्ध तो नौकरी करते ही कर लिया था। चाचा किसी स्कूल के अध्यापक तो थे नहीं, वह तो सरकारी महकमे में कर्लक थे।

चाचा अपनी अड़तिस साला सरकारी जिंदगी में कर्लक ही बने रहे। नौकरी के आरम्भ में ही जनसामान्य की समस्याओं से जुड़ा एक ऐसा टेबिल हाँथ लगा कि बाद में उसे छोड़ने की इच्छा ही न हुयी।

जनता से जुड़ा व्यक्ति जनसमान्य से अपने आपको अलग कैसे कर सकता है। प्रलोभन भी रामधन चाचा को विचलित नहीं कर सका। सारांश यह है कि जब चाचा सेवानिवृत हुये ता गांव में एक एकड़ जमीन, बड़ा सा सुंदर मकान और सारी सुख सुविधा घर मे मौजूद थी।

बात रामधन चाचा की लड़की के विवाह की हो रही थी। चाचा की लड़की का नाम विमला है। उच्च पद सा गोरा रंग, घोटालो सी बड़ी–बड़ी आँखें, रिश्वत से लुभावने ओठ, आश्वासन से मधुर वाणी, लंबी रकम सा लंबा कद। धनधान्य से भरी हुयी किसी मर्सीडीज की तरह उभरी–उभरी, पर साथ ही नाजुक और कोमल–कोमल सी।

जो देख ले बस देखता रह जाये। जब से कस्बे मे आयी है। नित्य टंटे शुरू हो गये है। भाई–भाई दुश्मन बन बैठे है। स्वर्ण पदक सी लुभावनी विमला को पाने की आड़ में आसपास की बिक्री बढ़ गयी है। विमला ने यहां एक क्रान्ति सी ला दी है। चलती है तो भ्रष्ट नेता के पिछलगुओं की तरह मनचलों की टोली साथ लेकर चलती है।

रामधन चाचा आजकल इसी कारण कुछ चिंतित है। कस्बा छोटा है स्वर्ण पदक किसे नहीं भाता। कोई प्रतियोगिता के नियमों को तोड़कर सामने आ खड़ा हुआ तो क्या होगा? बिटिया की जवानी घर में तो छुपायी नहीं जा सकती। और केवल जवानी होती तो इतनी चिंता नहीं थी साथ में सुंदरता और समृद्धि भी थी। विमला वेतन की नहीं रिश्वत सी रकम थी। अतः ज्यादा लुभावनी थी।

रामधन चाचा के जानकारी के अनुसार विमला के दिवानो में तीन उम्मीदवार प्रमुख थे। बिरजू, नगेश, और हेमंत। विमला तीनो को देखकर मुस्कुराती थी। अभी तक मात्र नजरों का ही खेल चल रहा था। वह उन्हें भा रही थी। प्रेम विवाह मे सदैव लड़के ही तौले जाते है।

बिरजु गांव की प्राथमिक पाठशाला में अध्यापक है। अध्यापक है अतः प्रेम को गंभीरता से ले रहा है। रामधन चाचा को अचानक आदर देने लगा है। उन्हें दूरसे देखकर कमानी की तरह झुक जाता है। विमला को देखकर केवल नजरों में ही मुस्कुराता है। एक दिन रामधन चाचा ने उसे घर पर बुला भेजा। बिरजू ने उस दिन नये परीधान धारण किये और शाम को चाय के समय चाचा के दरबार में पहुंच गया। रामधन चाचा ने उसका पूर्ण निरिक्षण किया और उससे संवाद स्थापित किया।

जीवन की सार्थकता किसमें है?

समाधान में।

पैसा क्या है?

हाँथ का मैल।

रिश्वत क्या है?

अपराध।

पत्नी को कैसे सुखी रखोगे?

अपने प्रेम से।

ठीक अब तुम जा सकते हो।

नगेश, सरकारी अस्पताल में आयुर्वेदिक डॉक्टर है। एक बार विमला को सर्दी खाँसी की शिकायत हुई थी, तभी वह संपर्क में आया था। तीन माह से लगातार चूरन की पुड़िया खिलाये जा रहा है। कहता है सर्दी खाँसी जड़ से दूर कर देगा ।

नाड़ी परीक्षण के समय विमला को टुकुर–टुकुर ताकता रहता है। विमला शर्माती है तो रूजीवन की सार्थकता किसमें है स्वंय भी शर्माता है। आज उसे संदेश मिला है की उसे रामधन चाचा ने घर बुलाया है। वह उनके घर पहुंचता है।

जीवन की सार्थकता किसमें है?

स्वस्थ निरोगी शरीर में।

पैसा क्या है?

मेहनत की कमाई। पेंशेंट की फीस। सरकार की पगार।

रिश्वत क्या है ?

गुनाह।

पत्नी को कैसे सुखी रखोगे?

अपनी तनख्वाह से। अपनी दवाइयों से। अपने प्रेम से। जा सकते हो।

ठीक है अब तुम भी जा सकते हो।

हेमंत स्थनीय थाने का थानेदार है। जब तब उनकी जीप विमला के आसपास से निकलती रहती है। वह विमला को देखकर कभी–कभी सौम्य गालियां भी देता है। इन गालियों की सौम्यता के कारण थाने के लोग विमला को बाई साहब मानने लगे हैं। हेमंत अभी अभी हफता वसूली से लौटा है। मुख पर परम संतोष है। रास्ते में दो मवालियों से तकरार हुई थी। उन्हे पवित्र रिस्तों से जुड़ी गालियों से नवाज कर पूर्ण संतुष्ट नजर आ रहा था कि रामधन चाचा का न्योता मिला। थानेदार साहेब मुस्कुराये और बोले, बुढ़ऊ रास्ते पर आ गया लगता है। शाम को निर्धारित समय पर हेमंत रामधन चाचा के सामने उनके मुंह पर सिगरेट का धुआं उड़ाता बैठा था।

जीवन की सार्थकता किसमें है?

अबे। रिश्ता तो कर। तुम सब का जीवन सार्थक कर दूंगा।

पैसा क्या है?

जीवन की मुस्कान। सुख समृद्वि सब कुछ तु कितना देगा दहेज में।

रिश्वत क्या है?

रिश्वत ही तो जीवन है। तनख्वाह तो पत्नी है, रिश्वत प्रेमिका है। मदमाती, गरमाती किसी पराई सौदर्यवती की तरह लुभावनी बुड़ऊ, रिश्वत को समझने में वषों लग जायेंगें। उसकी व्याख्या सिमित शब्दों में संभव नहीं है।

पत्नी को कैसे सुखी रखोगे?

थानेदार से यह पूछते शर्म नही आती। हमारे यहां सिपाहियों की पत्नियां राज करती है और तू मेरी होने वाली पत्नी के सुखी होने को लेकर शंकित है। भारतीय पुलिस व्यावस्था पर प्रश्नचिन्ह लगाता है?

रामधन चाचा कुतकृत्य हो गये। उनके हाँथ थानेदार के सम्मुख तुड़ते चले गये। उन्हे अपेक्षित वर जो मिल गया था। विमला शर्माती सी थानेदार के सम्मुख सामने आयी। उसे देखकर थानेदार के मुख से कोई सौम्य सी गाली निकली, जिसे आज सबने सुना और खिलखिला कर हंस पड़े।

# आपकी जुबान

## विश्व स्नेह समाज को समर्पित

स्नेह तुम्हारे अध्ययन से, हमने समाज को है जाना
व्यक्ति के व्यक्तिभावों से परिचय पाया
आधार तुम्हीं हो जन–जन तक
अपनत्व के संदेश पहूँचाने को
धन्य है यह प्रयाग शहर
जिसमें अंकुर स्नेह का फूटा है
फैलेगी शाखाएँ वहाँ–वहाँ
जहाँ–जहाँ भारत का कोना है,
विश्व स्नेह समाज तुम्हारे लेखों से,
देश हमारा महकेगा,
प्रकाश तुम्हार फैलेगा,
विश्व स्नेह समाज तुम्हारे अध्ययन से,
कुछ पंक्ति तुम्हें समर्पित हैं।

आर. के. तिवारी
महिला ग्राम कालोनी,
सूबेदारगंज, इला0

## सराहनीय है यह प्रयास

सेवा में,
सम्पादिका महोदया,

मुझे विश्व स्नेह समाज का प्रवेशांक पढ़ने को मिला। मैं इस पत्रिका के कलेवर को देखकर बेमन से इसे खरीदा था। लेकिन पढ़ने के बाद लगा कि यह पत्रिका वास्तव में समाज की दिग्दर्शक पत्रिका हैं। नम्रता यादव की कहानी संजोग मुझे काफी पंसद आयी। इसके अलावा राही अलबेला की बंदा गया काम से, मिथको को तोड़ती सहसत्राब्दी की नारी भी पंसद आयी। अगर आप कुछ पेज और रंगीन कर दे तो अच्छा होगा।

शरद कुमार, स्नेहलता मिश्रा, कु0 रेनु पटेल
प0 दीनदयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय
गोरखपुर

## एक पल विश्व स्नेह समाज के संग

अर्पण तुम्हें दोस्तों
अपना तन और मन,
मन पसन्द पत्रिका
विश्व स्नेह समाज के संग
कहानी, कविताओं से भरा
हुआ है हर एक रंग?
विश्व स्नेह को पढ़ने के बाद
उठती है दिल में उमंग
दर्दे दिल का इतना है अर्ज
करें इस बुक को रंगीन
फिर तो पढ़ने में और
भी लगेगी यारों ये हसीन

महोदय जी

हमने विश्व स्नेह समाज का प्रवेंशाक पढ़ा और पढ़कर हमें अत्यंत प्रसन्नता मिली, जिससे मेरा मनोबल और बढ़ा गया है। मेरे दोस्तों को भी यह पत्रिका काफी पंसद आयी। मै किसी भी चीज की झूठी तारिफ नहीं करता, लेकिन इसकी तारिफ किये बिना रहा नहीं जाता। पत्रिका में कुछ कम्पटीशनर छोत्रों की उपयोगी सामग्री प्रकाशित करें तथा कहानियों की संख्या बढ़ाने का कष्ट करें।

प्रचार कम डाले

सेवा में,
संपादक,
विश्व स्नेह समाज

विश्व स्नेह समाज का प्रवेंशाक पढ़ा। यह पत्रिका बाकी पत्रिकाओं से अलग नजर आयी। इसलिए मुझे पत्र लिखने पर मजबूर होना पड़ा। लेकिन एक आपसे शिकायत यह है कि आप अपने इस अंक प्रचार बहुत अधिक डाल दिए थे कृपया प्रचार को कम कर पठनीय सामग्री बढाने का कष्ट करें।

डा. जे0 एन0 श्रीवास्तव
एम.बी.बी.एस.,
काजीपुर, पटना, बिहार

---

आप भी अपने विचार, शिकायत एवं सुझाव हमें भेज सकते है। आपके विचार व सुझाव ही हमारी पूर्जी है। हम पूर्ण प्रयास करेंगे कि आपके सुझावों को छापे व उनके अमल में अपना कदम यथासम्भव बढ़ायें। आप हमें अपने विचार निम्न पते पर भेज सकते है।

**आपकी जूबान**
मासिक पत्रिका विश्व स्नेह समाज
277/486, जेल रोड, चकरघुनाथ,
नैनी, इलाहाबाद.211008

## एक नजर इधार भी

सफलता और असफलता एक की प्रक्रिया के दो अंग हैं। सर्जनात्मक प्रक्रिया में गलतियाँ मात्र सीढ़ी का काम करती हैं। अपनी विफलताओं की दर को दोगुनी कर देना ही सफलता का मार्ग है।

मृत्यु जीवन को अधिक मूल्यवान बनाती है। असफल होना और कष्ट पाना उतना भयावह नहीं है, कष्ट के भय से प्रयत्न ही न करना बाद में कहीं ज्यादा तकलीफ देह साबित होता है। पीड़ा को जीवन में स्थान देते हुए हमें "यर्थाथ को झेलने" वाले अनैतिकतावादी खैर और अतिपलायनवादी रुख जैसी चरम मात्रारिकताओं में संतुलन भी रखना चाहिए। दुःख सहने की क्षमता जुटाए बिना सुख अनुभव करने का सलीका नहीं आता।

**सूक्ति :** जो अपने दर्द और दुःखों को दूसरे पर थोपता है वह स्वयं कभी भी सुख की अनुभूति तक नहीं कर पाता।

## जीवन के हर क्षेत्र में सफलता का सबसे सरल एवं सीधा मार्ग

हम सभी अपने जीवन के हर क्षेत्र में सफल होना चाहते है! चाहे फिर वो क्षेत्र शिक्षा से सम्बन्धित हो, व्यापार से या व्यक्तिगत जीवन से।

पर बहुत कम ही व्यक्ति जीवन के हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर पाते है।

सभी क्षेत्र में सफल होना मुश्किल तो है पर असंभव नहीं। यदि हम हर क्षेत्र में एक आर्दश सामने रखकर उस आदर्श में अपने आप को ढ़ालने का प्रयास करे तो बहुत हद तक हम अपने लक्ष्य तक पहूँचने में सफल होगें। इसके लिए सबसे पहले तो हमें अपने आदर्श के बारे में पूर्णतः ज्ञान होना चाहिए अर्थात उसके आचार–विचार, मूल्यों, कार्य करने के तरीके, जीवन के सभी महत्वपूर्ण कार्यो, जीवन से सम्बंन्धित उसके हर पहलू पर विचार। साथ ही आदर्श चुनने में हमें बहुत सावधानी व सतर्कता बरतनी होगी। हमें इस बात का ख्याल रखना होगा कि हमारा आर्दश ऐसा होन चाहिए जिसे सम्पूर्ण संसार या एक बहुसंख्यक समाज ने स्वीकार किया हो उसको, उसके कार्यो एवं विचारों को मान दिया हो। स्वीकृति प्रदान की हो।

✍ज्योति नगरिया

# आहार सम्बन्धी कुछ स्वर्ण सूत्र

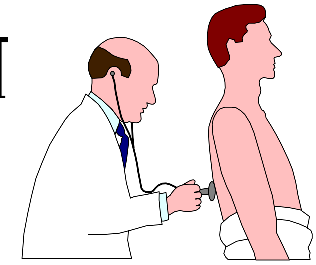

एस0पी0 सिंह
कोआर्डिनेटर, एक्यूप्रेशर एवं शोध प्रशिक्षण संस्थान, सम्मेलन मार्ग, मारवाड़ी धर्मशाला, इलाहाबाद

**1.भूख या प्यास लगने पर ही कुछ खाये या पिये–** समय हो गया, किसी ने खातिरदारी में कुछ प्रस्तुत कर दिया, किसी को खातिरदारी में उसका साथ देना है, कोई चीज देखने, सूंघने या खाने में अच्छी लगती है। इसलिए ही न खायें–पियें। क्योंकि जठराग्नि या पाचक अग्नि तभी तेज होती है जब भूख या प्यास लगी हो। बिना भूख और प्यास के कुछ भी खाना पीना जठराग्नि को उसी प्रकार मन्द कर देता है जैसे सुलगती आग पर ढ़ेर सी लकड़ी रख देना या पानी डाल देना। इससे पाचन शक्ति कमजोर, अवच, कब्ज, गैस आदि कुछ भी हो सकता है।

**2.भूख से थोड़ा कम खाये**–कई देशी और विदेशी प्रमुख चिकित्सकों का मानना है कि सामान्य व्यक्ति जितना खाता–पिता है उसके एक तिहाई से वह जिन्दा रहता है और दो तिहाई से डाक्टर। यानी प्रायः हर व्यक्ति आवश्यकता से अधिक आहार लेता है। वह केवल रोटी, चावल, दाल को ही आहार में गिनती करता है और दिन भर जो चाय, नाश्ता, फल, दूध आदि लेता है उसकी गिनती नहीं करता।

हमारा आमाशय या जठर एक थैल जैसा होता है। एक थैले में आप गेंहू, चना, जौ, मटर आदि अनाज डालें और उसे पूरा भर कर उसका मुँह बन्द कर दें तथा उसके बाद उसको हिलाये– जो अनाज जैसा नीचे ऊपर है वैसा ही और उधर ही रहेगा। यदि वह आपस में मिलेगा भी अधिक समय लेगा फिर भी भली भॉती नहीं मिलेगा। हमारा आमाशय फैलता सिकुड़ता है उससे ही उसमें पाचक रस मिलता है तथा आहार पदार्थो में घर्षण होता है जिससे पाचन क्रिया सम्पन्न होकर आहार ग्रहणी तथा छोटी ऑत में पूर्ण पाचन के लिये आगे बढ़ जाता है। यदि आमासय पूरी तरह से भरा होगा तो वह भलीभॉति फैलने–सिकुड़ने की क्रिया नहीं कर पावेगा। परिणाम स्वरुप पेंट और शरीर में भारीपन रहेगा, भोजन देर से पचेगा और आमासय में भोजन रहेगा तो सड़ेगा और गैस बनेगी।

जिस प्रकार खूब ढ़ेर सारी आग हो उसमें आग बुझा देने वाली वस्तुयें जैसे पानी या गीली लकड़ी थोड़ी मात्रा में डालें तो वह स्वयंम जल जायेगा और यदि आग थोड़ी हो और उसके ऊपर ढ़ेर सूखी लकड़ी रख दें या ढ़ेर सा घी डाल दें तो वह बुझ जायेगी जबकि यह दोनों आग को प्रज्वलित करने वाली वस्तुयें हैं। उसी प्रकार हमारी जठराग्नि है। यदि थोड़ी मात्रा में खाया जाय तो गरिष्ठ और भारी आहार भी पच जाएगा और अधिक मात्रा में खाने पर सामान्य और हल्का आहार भी हानिकारक होगा। विडम्बना यही है जो आहार भारी और गरिष्ठ होते है वे स्वादिष्ट होने के कारण खाये भी अधिक जाते है जिसका विपरीत प्रभाव पड़ता है।

**3. हर निवाले को 32 बार या कम से कम 16 बार अवश्य चबायें**–ईश्वर ने या प्रकृति ने हमें 32 दॉत दिये है इसलिए प्रत्येक निवाले (कौर या ग्रास) को 32 बार अवश्य चबाना चाहिये। आज–कल की भाग–दौड़ वाली जिन्दगी में चबाने के लिए इतना समय निकाल पाना प्रायः लोगों के लिए कठिन होता है तथा आहार में रेशा व फुजलों की कमी तथा उसकी मुलायमियत भी अधिक चबाने नहीं देतीं। अतः कम से कम 16 बार भी चबाने से काम चल सकता है क्यौंकि ऊपर–नीचे के दॉत एक साथ काम करते हैं। ऑतो को दॉत नहीं होते। अतः यदि हम दॉतो से पूरा काम नहीं लेगें तो वे बिना काम किये कमजोर होकर असमय टूट जायेगे और ऑते, दॉतों का भी काम करते–करते थक जायेगी और परिणाम होगा कब्ज और गैस।

बिना चबाये या कम चबा कर खाना डायबिटीज (मधुमेह) का प्रमुख कारण है। आप मधुमेह के रोगियों से बात करिये ज्ञात होगा कि अधिकांश उनमें ऐसे है जो निवाले को दो –चार बार मुँह में घुमा कर नीचे उतार देते हैं। भोजन का देर तक चबाने से दो लाभ होता है। पहला यह कि भोजन ढीला और महीन हो जाता है जिससे पचने में सुविधा होती है दूसरे भोजन करते समय मुँह में लालरस (लार या स्लाइव) निकलता है जो स्वेतसार (कार्बोहाइड्रेट) वाले पदार्थो को पचाकर ग्लोज, फ्रुक्टोज में बदल देता। कार्य आप रोटी –चावल आदि स्वेतसारीय पदार्थ दाल या सब्जी के बिना सूखा खाकर देखें थोड़ी देर में मीठा लगने लगेगा क्योंकि मुँह का लार स्वेतसार या मांड़ को ग्लोकोज/फ्रुक्टोज में बदलने लगता है। यदि कम चबाया जाता है तो यह कार्य पैंक्रियाज को अधिक इन्सुलिन बना कर करना पड़ता है। परिणाम स्वरुप वे थक जाते हैं। और इन्सुलिन बनाना कम देते हैं और डायबिटीज या मधुमेह रोगा हो जाता है। चबा–चबा कर खाने की आदत डालकर मधुमेह, कब्ज, गैस आदि से न केवल बचा जा सकता है वरन हो जाने पर इनको ठीक भी किया जा सकता है।

अमेरिका में चबा–चबा कर खाने का एक सिद्धात बन गया है जिसे फ्रैंचरिज्म कहते हैं। बात उन दिनों की है जब टी.बी. का समुचित इलाज नहीं था। फ्रेंचर नाम के एक सज्जन को टी.बी. थी और डाक्टरों ने उन्हें असाध्य घोषित कर दिया था। उन्होनें हर कौर को डेढ़ सौ बार चबाकर न केवल अपना रोग ठीक किया वरन भारोत्तोलन प्रतियोगिता भी जीती। तब से उनके नाम पर उक्त सिद्धात बन गया। अंग्रेजी में एक कहावत है– Eat your Milk and Drink Your Food

दूध को खाओ और भोजन को पियों। दूध भी मुँह में रोककर भोजन की तरह पीना चाहियें। भोजन को चबा–चबा कर इतना पतला कर देना चाहिए कि पिया जा सके।

**4. नाश्ता या भोजन के साथ पानी न पिये या कम से कम पिये**– जैसा कि हम ऊपर चबा–चबा कर खाने में लिख आये हैं कि श्वेतसार या कार्बोहाइड्रेट का पाचन मुँह के लार से होता है तथा आमाशय और ग्रहणी में अनेक प्रकार के पाचक रस, भोजन में मिलते हैं जो भोजन के अन्य तत्वों जैसे प्रोटीन, चिकानई आदि को पचाते है। यदि हम भोजन के साथ पानी पी लेते है तो ये पानी में घुल कर पतले हो जाते है तथा शीघ्र आगे बढ़ जाते है। परिणामस्वरुप भोजन का पाचन समय से भली–भॉति नहीं हो पाता और देर तक पेट में पड़ा सड़ता है जिससे कब्ज और गैस बनता है। अतः दाल या सब्जी में जो पानी होता है, भोजन के समय भोजन को ढीला बनाने के लिये उतना ही पर्याप्त है। अतिरिक्त जल हानिकारक होता है, और गरम भोजन के साथ यदि फ्रिज या बर्फ मिला पानी हुआ तो दुगुना हानिकारक हो जाता है, जठराग्नि को गंदा कर देता है या बुझा देता है। हॉ, यदि ऐसा भोजन

किया जा रहा है जिसमें तरल पदार्थ नहीं है तो थोड़ा जल पिया जा सकता है। आयुर्वेद में हजारो वर्ष पूर्व कहा गया है कि भोजन के अंत में पिया हुआ जल विष के समान होता है। अतः केवल एक दो घूट गला साफ करने भर को ही पियें।

भोजन करने के दो या कम से कम एक घंटे बाद जल पीना प्रारम्भ करें और थोड़ा–थोड़ा जल दूसरे भोजन के एक या आध घंटे पूर्व तक पिये। पर्याप्त जल पीना भी आवश्यक है। जल पीने का सर्वोत्म समय प्रातः उठते ही सवा लिटर तक या उबकाई आने तक पिये और उसके बाद पवन। एक घंटे तक कुछ भी न खाये, पिये। यह उषापान कब्ज, गैस आदि अनेक रोगो को नष्ट करने में सफल है। हमारी इस उषापान विधि को जापान से इन दिनों जल चिकित्सा के नाम से प्रचारित किया जा रहा है।

बहुत कम या बहुत अधिक जल पीना भी उसी भॉति हानिकर है जैसे भोजन अति ठंढा जल हानिकारक होता हैं। कुआ या घड़े का जल जितना ठंढा होता है वही पर्याप्त है। 40–50वर्ष की आयु के बाद तो थोड़ा–थोड़ा गुन–गुना जल पिया जाता रहे तो शरीर में पर्याप्त गर्मी बनी रहेगी। एकआध ा बार साधारण ठढ़ा जल पीते रहने चाहिए ताकि केवल गरम पानी की आदत न पड़े जाये।

**5. फ्रिज का या बर्फ मिला पानी और चाय से यथा सम्भव बचें**– फ्रिज का पानी पीने से शरीर का ताप कम हो जाता है और चाय पीने से बढ़ जाता है। इस घटे या बढ़े ताप को शरीर सामान्य बनाता है जिसमें जीवनी शक्ति व्यर्थ नष्ट होती है। अति ठढ़ा पानी पाचन ाग्नि या जठराग्नि को मंद कर देता है तथा गर्म भोजन के साथ दॉतो को भी क्षति पहॅुचाता है।

**6.वहीं वस्तुयें खाये–पियें जो स्वास्थ्यकर हो** – जीवन दो प्रकार की वस्तुओं, परिस्थितियों से वास्ता पड़ता है। एक ज्ञेय दूसरा प्रेय। ज्ञेय वह है जो हितकारी हो भले ही आहार–व्यवहार में कुछ अरुचिकर लगे प्रेय वह है आहार–व्यवहार में तो रुचिकर लगता है किन्तु उसका प्रभाव अहितकारी होता है। हमारा दैनिक आहार वही हो सकता है जो ज्ञेय हो। जो प्रेय हो वह कभी–कभार और अल्प मात्रा में ही लिया जाना चाहिये। प्रयास यह करना चाहिए कि जो ज्ञेय हो वही प्रेय भी हो। उसे ऐसे तैयार किया जाय, ऐसे परोसा जाय कि ज्ञेय और प्रेय दोनों हो।

# पान मसाला जहर है, इससे बचिए

प्रस्तुति :सीमा मिश्रा

पान मसाले का उत्पादन करने वाली कंपनियॉ कुकर–मुत्ते की तरह बढ़ रही हैं। बाजार में बढ़ती प्रतियोगिता के कारण गुटखा का एक पाउच 5 ग्राम का एक रुपये में मिलता है।

असली कत्था, सुपाड़ी, छोटी इलायची, लौंग, पिंपरमेंट और चूना मिलाया जाए तो एक पाउच की लागत ढ़ाई रुपया आती है, फिर यह एक रुपये में कैसे मिलता है? आइए, हम बताते है। इलायची, पिंपरमेंट और लौंग के स्थान पर सुगंधित केमीकल्स, सुपाड़ी के स्थान पर सड़ी सुपाड़ी, पेड़ की छाल, मूगफली के रंगे अखरोट के छिलके, कत्थे के स्थान पर गैंबियर पेंट या खड़िया मिट्टी, गोंद मिलाकर ताड़ के रस में पकाया गया मिश्रण मिलाया जा रहा है। चॉदी के वर्क के स्थान पर एल्यूमिनियम आदि कोई चमकीला पदार्थ डाला जाता है, जिससे कैंसर हो सकता है।

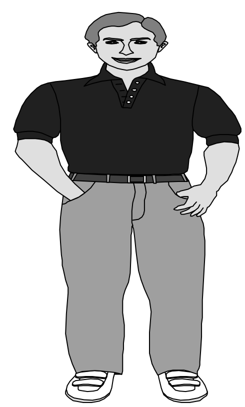

पान मसाले में मिलावट का एक मसाला कानपुर की बिल्हौर तहसील के गांव बीबीपुर निवासी श्री अनिलकुमार अग्निहोत्री के साथ हुआ। उन्होंने बिल्हौर स्थित पान की दुकान से पान मसाले का एक पाउच खरीदा। इसे फाड़कर मुॅह में उलटा करके डाला, लेकिन पाउच का सारा मसाला मुॅह के अन्दर नहीं गया। उन्होंने पाउच ध यान से देखा तो उसमें एक मरी हुई छिपकली का मुॅह फॅसा था, जिसके कारण पानमसाला बाहर नहीं आ रहा था। श्री अग्निहोत्री ने तुंरत पानमसाला थूक दिया, फिर भी पानमसाले का कुछ अंश मुॅह में चले जाने के कारण उनका जी मिचलाने लगा और उल्टियॉ होने लगीं। उन्हें डाक्टर के पास ले जाया गया और पुलिस थाने में रिर्पोट कराई गई। कानपुर जिला उपभोक्ता फोरम में परीवादी अनिलकुमार अग्निहोत्री ने पानमसाला निर्माता कंपनी को वादी बनाकर दोषपूर्ण पानमसाला बनाने और बेचने के लिए अटठाइस हजार रुपये शारीरिक क्षति, दस हजार रुपये मानसिक क्षति औश्र पॉच सौ रुपये वाद खर्च के रुप में मॉगे। जिला फोरम में कंपनी की ओर से कहा गया कि पाउच खरीद का कैशमेमो प्रस्तुत नहीं किया गया और पाउच में छिपकली थी या नहीं इसकी जॉच नही कराई गई। विक्रेता ने कहा कि वह गरीब आदमी है और पान मसाला बेचकर परिवार चलाता है। उसे नहीं मालूम कि पुड़िया में क्या है? जिला फोरम ने दोनों के तर्क सुनकर कहा कि एक दो रुपये की वस्तु खरीदने पर न तो कोई कैशमेमा देता है और न लेता है। छिपकली होने की बात स्वयं जिला फोरम ने देखी। अतः जॉच का कोई औचित्य नहीं है। जिला फोरम ने उपभोक्ता को हर्जाना दिलाया और निर्माता कंपनी को सुधार करने की हिदायत दी।

एक अन्य मामले में मुबई निवासी युवक विक्रम सांवत देसाई पानमसाले का आकर्षक विज्ञापन पढ़कर उसे खाने लगा। पाउच में यह नहीं लिखा था कि पानमसाला खाना हानिकारक है। कई साल बाद उसको मुॅह खोलने में तकलीफ होने लगी तो वह डाक्टर के पास गया। फिर लाभ न होने पर वह टाटा मेमोरियल अस्पताल गया। अस्पताल की जॉच से पता लगा कि पानमसाला चबाने से उसे मुॅह में सबक्यूकस फाइब्रोसिस हो गया है। यह रोग अध िक शराब पीने या तेज मिर्च खाने से भी हो जाता है। किंतु देसाई इनके आदी नहीं थे। चिकित्सा में भारी खर्च को देखते हुए श्री देसाई `मुबंई स्थित महाराष्ट्र उपभोक्ता राज्य आयोग में निर्माता कंपनी पर दावा ठोक कर हर्जाना मॉगा। राज्य आयोग ने डाक्टरों की रिपोर्ट देखी। रिर्पोट में कहा गया था कि वह कैसर पूर्व जैसी स्थिति से गुजर रहा है और यह स्थिति पानमसाले के सेवन से हुई प्रतीत होती है। इस कारण युवक की पढ़ाई ठप्प हो गई है और उसे भयंकर मानसिक वेदा हो रही है। राज्य आयोग में निर्माता कंपनी की ओर से अपना पक्ष प्रस्तुत करने कोई नहीं आया। फलस्वरुप राज्य आयोग ने निर्माता कंपनी पर 20 लाख रुपये की क्षतिपूर्ति लगाते हुए 10 हजार रुपये वाद खर्च के साथ श्री देसाई को देने को कहा। आयोग ने माना कि पानमसाले के सेवन के कारण ही एक युवक का जीवन बर्बाद हो गया है। वह पढ़ लिखकर कुछ बन सकता था और अपने देश का गौरव बढ़ा सकता था। पानमसाले के सेवन ने उसका भविष्य चौपट कर दिया है और वह हर्जाना पाने का अधिकारी है।

पान मसाला बहुत हानिकारक है। युवा और बच्चे इसकी लपेट में आते जा रहे है। 14–15 साल के बच्चे पानमसाले के आदी हा गए है। पाठको से निवेदन है कि इसे पढ़कर अपने परिवार में, कम से कम अपने बच्चों को अवश्य समझायें जिससे वे और उनके साथी इनका प्रयोग न करें।



कुछ खास बातें

# गहरी पैठ

विदांस सी लगने वाली नवनीत नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा से अभिनय का प्रशिक्षण प्राप्त कर 1989 में मायानगरी मुबई में प्रवेश की। मायानगरी में वे नसीरुद्दीन शाह के नाट्य दल से जुड़ गई। अभिनय में पहचान मिली तो उन्हें फिल्मों और टी0वी0 धारावाहिको में मौंके मिलते गये। और वह एक चरित्र अभिनेत्री के रुप में अपनी गहरी पैठ बना ली।

नवनीत ने अपने बारे में बताया कि उन्हें अभिनय के क्षेत्र में बहुत ज्यादा संघर्ष नहीं करना पड़ा। वे फिल्मों और टीवी धारावाहिको में समान रुप से काम करने की सोची और उन्हें काम मिलता चला गया। उनकी पहली फिल्म थी प्यार भरा दिल और इसके बाद जान तेरे नाम। इनमें छोटे किरदार होने के बावजूद उन्हें एक नया आत्मविश्वास मिला। बाद में हम है राही प्यार के जैसी सफल फिल्म में काम करने का मौका मिला। और गाड़ी दौड़ चलीं छोटे परदे पर रमन कुमार निर्देशित धारावाहिक तारा ने उनकी लोकप्रियता में चार चॉद लगा दिये।

नवनीत अब तक अंदाज, कर्ज, मै अनाड़ी तू अनाड़ी जैसे दर्जन भर धारावाहिको और राजा हिन्दुस्तानी, जानम समझा करो, हद कर दी आपने, क्या कहना और तुम बिन जैसी लगभग तीस फिल्मों में काम कर चुकी है। लेकिन क्या नवनीत निशान को इसके बाद भी अपनी अभिनय प्रतिभा प्रर्दशित करने का सही मौका मिल रहा है? नवनीत ने कहा–मैंने एन.एस.डी. से प्रशिक्षण यह सोचकर कतई नही लिया था कि मुझे हीरोइन बनना है। यही कारण है कि मैं चरित्र भूमिकाओं को जरिए अपनी उपस्थिति दर्ज कराना चाहती थी। अब चरित्र भूमिकाएं किसी फिल्म में कितनी सशक्त हो, इसका निर्धारण किसी कलाकार के वश में नहीं। हां, अपने स्तर पर मेरी हमेशा ही कोशिश रहती है कि स्पष्ट पहचान देने वाली भूमिकाएं मिलें। राजा हिन्दुस्तानी या तुम बिन की अपनी भूमिकाओं को मैं इसी परिप्रेक्ष्य में लेती हूँ। मुझे लगता है कि काम करते रहने चाहिए। काम करते रहने से ही बेहतर भूमिकाएं मिलने की संभावना बनती है। दरअसल किसी को पता नहीं रहता कि कब कौन–सी भूमिका परदे पर यादगार बन जाएगी।

आज के दौर में चरित्र अभिनेत्रियों की भूमिकाओं पर लेखक–निर्देशक उतनी मेहनत नहीं करते, जितनी कि पुरानी फिल्मों में होती थी। अभिनेत्रियां भी अपनी भूमिका स्वीकार करते समय इस संबंध में निर्माता–निर्देशक से कोई बात नहीं करतीं। क्या चरित्र अभिनेत्रियों को इस सबंध में हस्तक्षे नहीं करना चाहिए? नवनी साफ–साफ कहती हैं, मामला ब्रेड और बटर का हो तो कोई कैसे हस्तक्षेप कर सकता है? चरित्र अभिनेत्रियों की इस बारे में क्या राय है, मुझे नहीं पता। लेकिन मेरा मानना है कि इस तरह की राय रखना काफी कठिन है। निश्चित रुप से पहले मैं चरित्र भूमिकाओं के बारे में काफी उत्साहित रहती थी, लेकिन अब यर्थाथ तो यही है कि स्थितियां पूरी तरह बदल चुकी हैं। हालांकि कहीं न कहीं आशा की किरण भी मन में है कि आशुतोष गोवारिकर या फरहान अख्तर जैसे नए निर्देशक का इंडस्ट्री में प्रवेश हुआ है तो फिल्म के हर फ्रेम और पात्रों के निरुपण के मामले में अवश्य बड़ा बदलाव आएगा।

नवनीत निशान स्वीकार करती है कि छोटे परदे पर अभिनय की स्थितियां बेहतर हैं, लेकिन बड़े प्रोजेक्ट न होने के कारण पैसों के मामले में यहां भी समस्या आ जाती है। मैं आज भी तारा जैसी किसी धारावाहिक में काम करने की तलाश में हूं, लेकिन लगता है कि ऐसे धारावाहिक कम ही बनते है। यूं मैं रवि राय के एक नए धारावाहिक में जल्द ही काम करने वाली हूं। मुझे फिल्मी व्यस्तताओं के बावजूद टीवी धारावाहिकों में साधारण भूमिकाएं स्वीकार करने की अपेक्षा फिल्मों में छोटी चरित्र भूमिकाएं निभाना ज्यादा उचित लगता है। कहती है नवनीत।

नवनीत फरीदा जलाल और अनुपम खेर से चरित्र अभिनय मे मामले में काफी प्रभावित है। यूं उन्हें नरगिस का अभिनय श्रेष्ठ लगता है। नर्गिस के अभिनय के लिए वह मदर इंडिया कई–कई बार देख चुकी हैं। आगे वह मनोज अग्रवाल निर्देशित फिल्म तेरा नाम मेरा नाम गोबिदां के साथ अभिनय करती दिखाई देंगी, तो धर्मेश दर्शन की फिल्म हॉ, मैंने भी प्यार किया में अभिषेक करिश्मा और अक्षय के साथ धमाल करेंगी।

**मुबई ब्यूरो**

# क्या आप बेरोजगार हैं?

**क्या आप पैसा कमाना चाहते हैं?**

**क्या आप चाहते हैं कि आपका इंडिया के टॉप टेन सिटी में अपना फ्लैट हो?**

आपकी अपनी दो–दो कारें हो?

क्या विदेश यात्रा पर बिना पैसा खर्च किए जाना चाहते है?

क्या आप चाहते है कि आपके पास अच्छे मॉडल की मोटर साईकिल हो?

क्या आप चाहते है कि आपके पास लाखों रुपयों का बैंक बैलेंस हो?

तो आइए आपको ले चलते हैं ख्वाबों की दुनियां में ख्वाबों को हकीकत में बदलने के लिए आपके साथ आया है।

विस्न नेट वर्क सिस्टम का अनोखा प्लान। जो आपको उपरोक्त सारी चीजें उपलब्ध करायेगा।

बस आपका थोड़ा–सा धैर्य, थोड़ी सी मेहनत,

कर देगी आपके प्रत्येक ख्वाब को हकीकत।

विस्तृत जानकारी के लिए हमें लिखें या मिलेः–

<u>विस्नेट सिस्टम</u>

मासिक पत्रिका **<u>विश्व स्नेह समाज</u>** कैम्पस

२७७/४८६, जेल रोड, चकरघुनाथ,

नैनी, इलाहाबाद

स्थानीय स्पांसरः-

VIS NET SYSTEM

जीम तज वि मतंद उनबी उवदमल पद समै चमतपवक.


# THE SCHOOL AND HOME FOR THE BLIND

## (Blind Asylum)

Naini, Allahabad-8, U.P. ☎ :696301

## *नेत्रहीन विद्यालय में नेत्रहीन विद्यार्थियों का प्रवेश प्रारम्भ हो गया है।*

*<u>विद्यालय के उद्देश्य :</u>*

1. *नेत्रहीन बालकों को ब्रेल शिक्षा के माध्यम से शिक्षित बनाना साथ ही संगीत गायन, वादन एवं हस्त कला का ज्ञान देकर उन्हें आत्मनिर्भर बनाना।*
2. *नेत्रहीन बालकों को रहने के लिए प्राकृतिक एवं स्वच्छ वातावरण देकर उनके विकास में सहायक बननां*
3. *समाज को ये बताना कि नेत्रहीन बालक किसी पर बोझ नहीं हैं। उसे समाज से अपने अधिकार प्राप्त करने के लिए जागरुक बनाना।*

*सुविधा :*

1. *निःशुल्क शिक्षण एवं आवास व्यवस्था*
2. *14 वर्ष से अधिक उम्र के बालको के लिए तकनिकी प्रशिक्षण*

कीमत:3.00रुपए

दिसम्बर–2001

# विश्व स्नेह समाज

मासिक पत्रिका

## हमारा अगला अंक

अगले अंक में पढ़ना न भूलिए,

अपनी प्रति अभी से बुक करा लें।

☞ **आवरण परिचर्चा :** आंतकवाद का जन्म और उसका निवारण पर (इसमें नेताओं, वरिष्ठ वकीलों, IAS, IPS & PCS, बुद्धिजीवि व्यक्तियों, एवं कम्पीटशनर छात्रों के विचार दिये जाऐगे।)

☞ इंटरनेट के द्वारा फैलता वायरस का जॉल

☞ राजनीतिज्ञों पर गहरा कटाक्ष "हम और हमारे राजनीतिज्ञ"

☞ इलाहाबाद की गौरव तृप्ति शाक्या से भेंटवार्ता

☞ प्रयाग के महान साहित्य सपूत कैलाश गौतम से भेंटवार्ता

☞ इलाहाबाद के पुलिस व्यवस्था को दुरुस्त बनाने वाले श्री एस0एस0 विश्वकर्मा, वरिश्ठ पुलिस अधीक्षक, आई0पी0एस0 इलाहाबाद से की गयी भेंटवार्ता।

☞ नया साल, ईंद, क्रिसमस, जन्म दिन, परीक्षा पास करने पर, नौकरी प्राप्त करने पर, शादी व शादी की साल गिरह पर बधाई व विज्ञापन अभी से बुक करा लें।

☞ रोचक कहानियॉ, ज्योतिष संसार, हंसगुल्ले इत्यादि ढ़ेर सारी पढ़नीय और संग्रहणीय सामग्री।

**अपनी प्रति आज और अभी सुरक्षित करा लें। कहीं देर न हो जाए।**

**सम्पादकीय कार्यालय :**

277 / 486, एफ0सी0 एल0सी0
कम्पाउन्ड, जेल रोड, चकरघुनाथ,
नैनी, इलाहाबाद

**शाखा :**

एम.टेक कम्प्यूटर एजुकेशन सेन्टर
कौशाम्बी रोड, धुस्सा, इलाहाबाद
फोन न0 :